हिन्दी दैनिक

लखनऊ जंक्शन

RNI NO.-UPHIN/2015/64743 Email-lkojunction@gmail.com

वर्षः 11 अंकः 164 लखनऊ, शनिवार 07 फ़रवरी 2026 पृष्ठः 04 मूल्यः 01 रूपये

सुप्रीम कोर्ट का ऐतिहासिक फैसला, नाबालिग लड़की के 30 सप्ताह के गर्भ को समाप्त करने की दी अनुमति

दिल्ली ब्यूरो

नयी दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को एक महत्वपूर्ण फैसले में एक नाबालिग लड़की के 30 सप्ताह के गर्भ को चिकित्सकीय रूप से समाप्त करने की अनुमति दे दी। न्यायालय ने स्पष्ट रूप से कहा कि कोई भी अदालत किसी महिला को, और विशेष रूप से एक नाबालिग लड़की को, उसकी इच्छा के विरुद्ध गर्भावस्था जारी रखने के लिए मजबूर नहीं कर सकती है। न्यायमूर्ति बी.वी. नागरत्ना और न्यायमूर्ति उज्ज्वल भुइयां की पीठ ने जोर देकर कहा कि गर्भवती लड़की को बच्चे को जन्म देने या नहीं देने के उसके अधिकार को उचित महत्व दिया जाना चाहिए, खासकर तब जब उसका मन नहीं हो कि वह बच्चे को जन्म दे और ऐसी इच्छा उसने साफ साफ शब्दों में बार बार जाहिर भी की हो। पीठ ने स्पष्ट किया कि मुख्य मुद्दा यह था कि क्या एक नाबालिग को ऐसी गर्भावस्था जारी रखने के लिए मजबूर किया जा सकता है जो उसकी मर्जी के बिना

है। अदालत ने कहा, अदालत किसी भी महिला को, नाबालिग बच्चे की तो बात ही छोड़िए, अपनी गर्भावस्था पूरी करने के लिए मजबूर नहीं कर सकती, अगर उसका ऐसा करने का इरादा ही नहीं हो।ष् न्यायालय ने माना कि यह मामला इस पर निर्भर नहीं करता कि गर्भधारण सहमति से बने संबंधों के कारण हुआ था या दुष्कर्म से। वास्तव में फैसला इस बात से तय होगा कि नाबालिग की वह स्पष्ट इच्छा क्या है और उसका मन यही है कि वह बच्चे को जन्म न दे। न्यायमूर्ति नागरत्ना ने स्वीकार किया कि हालांकि एक बच्चे का जन्म अंततः एक जिंदगी को दुनिया में लाना है, लेकिन इस मामले में नाबालिग की स्पष्ट अनिच्छा सबसे महत्वपूर्ण कारक है। उच्चतम न्यायालय ने मुंबई के जेजे अस्पताल को निर्देश दिया कि वे सभी आवश्यक चिकित्सा संबंधी उपायों का पालन करते हुए गर्भावस्था के चिकित्सकीय समापन की प्रक्रिया शुरू करें। यह फैसला भारत में गर्भपात कानून के तहत श्प्रजनन अधिकारोंश की व्याख्या में एक मील का पत्थर माना जा रहा है। कारण यह है कि 24 सप्ताह की कानूनी सीमा के बाद भी विशेष परिस्थितियों में अदालत ने इस लड़की की पसंद को प्राथमिकता दी है। उल्लेखनीय है कि मेडिकल टर्मिनेशन ऑफ प्रेगनेंसी संशोधन अधिनियम 2021 के अनुसार गर्भपात की समय सीमा को विभिन्न श्रेणियों में निर्धारित किया गया है।सामान्य परिस्थितियों में सभी महिलाओं के लिए 20 सप्ताह तक के गर्भ को समाप्त करने की अनुमति है, मगर इसके लिए डॉक्टर की सलाह आवश्यक है। विशेष श्रेणियों की महिलाओं जैसे कि दुष्कर्म का शिकार बनी लड़कियां, नाबालिग, विधवाओं, दिव्यांगों या गंभीर बीमारी से पीड़ित महिलाओं के लिए यह सीमा 24 सप्ताह तक निर्धारित है और इसके लिए दो डॉक्टरों की इजाजत अनिवार्य है। यदि गर्भ में पल रहे भ्रूण को गंभीर बीमारी है, तो राज्य स्तरीय मेडिकल बोर्ड की अनुमति के बाद 24 सप्ताह के बाद भी गर्भपात कराया जा सकता है। इसके अलावा अगर गर्भवती महिला के जीवन को तत्काल कोई गंभीर खतरा हो, तो कानून की किसी भी समय सीमा के बिना आपातकालीन स्थिति में गर्भपात की अनुमति दी जाती है।

न कर्फ्यू न दंगा, यूपी में अब सब चंगा

हरिद्वार में गरजे मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ

संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने हरिद्वार के भारत माता मंदिर, सप्त सरोवर रोड के पास सप्तऋषि आश्रम ग्राउंड में संत सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि यूपी अब एक पिछड़ा राज्य नहीं वरन देश की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार बन गया है। यूपी की बेहतर

कानून–व्यवस्था का जिक्र करते हुए कहा कि उत्तर प्रदेश अब दंगों और कर्फ्यू से मुक्त होकर तेजी से विकास कर रहा है। सीएम ने कहा कि बद्री विशाल का बद्रीनाथ धाम, केदारनाथ केवल आस्था के केंद्र नहीं हैं, ये राष्ट्र चेतना के केंद्र हैं। राष्ट्र यहां से शक्ति प्राप्त करता है। बद्रीनाथ धाम और केदारनाथ धाम सिर्फ आध्यात्मिक केंद्र नहीं हैं वरन राष्ट्रीय चेतना के केंद्र बिंदु हैं। राष्ट्र को यहीं से शक्ति मिलती है। हमने इन केंद्र बिंदुओं को सम्मान के साथ आगे बढ़ाया है। हमने इसकी विरासत का सम्मान किया है। उसकी रक्षा की है। नतीजा है कि एक समय बीमारू राज्य रहा उत्तर प्रदेश आज भारत की अर्थव्यवस्था में एक बड़ी सफलता बन रहा है। प्रगति के नए रास्ते पर आगे बढ़ रहा है।अब यूपी में अराजकता नहीं है। अब दंगे फसाद नहीं हैं। गुंडागर्दी नहीं हैं। यानी न कफ्यू, ना दंगा यूपी में अब सब चंगा।योगी आदित्यनाथ ने कहा कि आज मेरा सौभाग्य है कि मुझे उत्तराखंड में यहां पर भागीदार बनने का अवसर प्राप्त हो रहा है। पिछले कुछ वर्षों के दौरान देश के अंदर हम लोगों ने व्यापक परिवर्तन देखा है। यह निर्माण की वह गाथा है जिसका सैकड़ो वर्षों से इंतजार था। भारत केवल जमीन का एक टुकड़ा भर नहीं है। यह ऋषि परंपरा की शाश्वत चेतना का भी केंद्र है। यहां संस्कृति केवल आस्था नहीं, एक पूरा जीवन दर्शन है।इस वजह से ही मैं कहता हूं कि भारत केवल एक तिथि में नहीं बना है। भारत किसी एक सत्ता की देन नहीं है। सनातन चेतना ही इसका स्वाभाविक प्रवाह है। चेतना का परिणाम हमे सुप्रीम कोर्ट पर ध्येय वाक्य के तौर पर मिलता है कि यतो धमर्रू ततो जयरू यानी जहां धर्म है वहीं विजय है। भारत का उच्चतम न्यायालय भी इस मंत्र को अंगीकार करता है। धर्म कभी कमजोर नहीं होता है, उसे जानबूझ कर कमजोर किया जाता है। जो राष्ट्र अपनी सभ्यता और संस्कृति की उपेक्षा करता है, वह न वर्तमान को सुरक्षित रख पाता है और न भविष्य को संजो पाता है। वैदिक भारत एक आत्मनिर्भर सभ्यता का प्रतीक है। आक्रांताओं के आने से पहले भारत केवल एक भूभाग नहीं था। वह पूर्ण विकसित सभ्यता, संस्कृति थी। यह राष्ट्र हमारे ऋषियों की तपस्या, किसानों के श्रम से और कारीगरों की श्रृजनशीलता के साथ खड़ा हुआ था। कार्यक्रम में केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और आध्यात्मिक गुरु स्वामी अवधेशानंद गिरि, सीएम पुष्कर सिंह धामी ने हिस्सा लिया।

अबुझमाड़ के जंगल में नक्सलियों के साथ मुठभेड़, सी-60 कमांडो शहीद, तीन नक्सली ढेर

एजेंसी

गढ़चिरौली। महाराष्ट्र और छत्तीसगढ़ की सीमा पर स्थित अबूझमाड़ के घने जंगलों में नक्सलियों के साथ

हुई एक भीषण मुठभेड़ में गढ़चिरौली पुलिस का एक सी–60 कमांडो शहीद हो गया और तीन नक्सली मारे गए हैं। अधिकारियों ने शुक्रवार को इस घटना की पुष्टि करते हुए बताया कि भामरागढ़ उपखंड के जंगलों में नक्सलियों की गतिविधियों की खुफिया सूचना मिलने के बाद यह ऑपरेशन शुरू किया गया था। पुलिस को जानकारी मिली थी कि छत्तीसगढ़ के कुछ नक्सली इस क्षेत्र में मौजूद है। सूचना मिलने के बाद गुरुवार को 14 कमांडो टीमों ने बड़े पैमाने पर नक्सल विरोधी अभियान छेड़ा। मुठभेड़ के दौरान सुरक्षाबलों ने नक्सलियों के दो शिविरों को पूरी तरह ध्वस्त कर दिया। पुलिस ने मौके से एक महिला नक्सली सहित कुल तीन नक्सलियों के शव बरामद किए हैं। इलाके की तलाशी के दौरान घटनास्थल से एक एके–47 और एक एसएलआर राइफल भी जब्त की गई है। इस संघर्ष में अहेरी तालुका के रहने वाले 38 वर्षीय सी–60 जवान दीपक चिन्ना मडावी नक्सलियों की गोलीबारी में गंभीर रूप से घायल हो गए थे। उन्हें हेलीकॉप्टर के जरिए जंगल से एयरलिफ्ट कर अस्पताल ले जाया गया, लेकिन इलाज के दौरान उन्होंने दम तोड़ दिया। इस ऑपरेशन में एक अन्य सी–60 जवान जोगा मडावी भी घायल हुए और उन्हें बेहतर इलाज के लिए गढ़चिरौली भेजने की व्यवस्था की गई।

यूपी में कानून व्यवस्था मजबूत, 2027 में तीसरी बार बनाएंगे सरकार, सपा पर साधा निशाना

एजेंसी

मुरादाबाद। मुरादाबाद में उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने पंचायत और 2027 के विधानसभा चुनावों को लेकर भाजपा की रणनीति पर खुलकर बात की। उन्होंने कहा कि भाजपा हमेशा जनता के बीच मौजूद रहती है और यही उसकी सबसे बड़ी ताकत है। प्रधानमंत्री की जनकल्याणकारी योजनाओं ने आम लोगों का दिल जीता है। आज प्रदेश की कानून व्यवस्था की हर तरफ सराहना हो रही है। इसी भरोसे के साथ 2027 में भाजपा तीसरी बार सरकार बनाएगी। शुक्रवार को डिप्टी सीएम ने कहा कि उत्तर प्रदेश का चतुर्मुखी विकास हुआ है। सड़क, बिजली, पानी, स्वास्थ्य, शिक्षा और सुरक्षा जैसे बुनियादी क्षेत्रों में बड़े बदलाव आए हैं। आज जनता की समस्याओं का समाधान प्राथमिकता पर हो रहा है। प्रतिव्यक्ति आय में वृद्धि हुई है और वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट योजना से बड़ी संख्या में लोगों को रोजगार मिला है। उन्होंने कहा कि प्रदेश अब बीमारू नहीं रहा, बल्कि विकसित राज्य की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। एसआईआर को लेकर पूछे गए सवाल पर ब्रजेश पाठक ने कहा कि पूरी प्रक्रिया पारदर्शिता के साथ हो रही है। मतदाता सूची सही और निष्पक्ष बने, इसके लिए अधिकारी काम कर रहे हैं। यह पूरी प्रक्रिया निर्वाचन आयोग की देखरेख में संपन्न की जा रही है। विपक्ष अपनी हार को पहले से देखकर बेवजह हो–हल्ला मचा रहा है। उन्होंने समाजवादी पार्टी पर निशाना साधते हुए कहा कि सपा अराजकता की राजनीति को अभी तक नहीं भूल पाई है। जब–जब प्रदेश में सपा की सरकार आई है, तब–तब प्रदेश को दंगों, गुंडई और अराजकता में झोंकने का काम किया गया है।

निर्माणाधीन होटल में लगी आग, धुएं में फंसे 200 श्रमिक; 13 गाड़ियों ने पांच घंटे में पाया काबू

संवाददाता

लखनऊ। लखनऊ में विभूतिखंड थाने के बगल स्थित निर्माणाधीन सात मंजिला होटल ताज के बेसमेंट में शुक्रवार शाम को भीषण आग लग गई। इस हादसे में बेसमेंट में काम कर रहे 200 श्रमिक धुएं के कारण फंस गए थे। हालांकि, दूसरे तल पर काम कर रहे श्रमिकों ने उन्हें सुरक्षित बाहर निकाल लिया। घटनास्थल पर पहुंची दमकल की 13 गाड़ियों की मदद से करीब पांच घंटे में आग पर काबू पा लिया गया। गनीमत रही कि कोई हताहत नहीं हुआ। होटल में बेसमेंट के बी–1, बी–2, बी–3 और ऊपर चार मंजिल हैं। बेसमेंट के बी–1 में टाइल्स और डेकोरेशन का काम चल रहा था, जहां लगभग 200 श्रमिक काम कर रहे थे। बी–3 में वायरिंग हो रही थी। शाम करीब चार बजे, बी–3 में पत्थर और टाइल्स काटते समय मशीन से निकली चिंगारी पास रखे ज्वलनशील पदार्थ के संपर्क में आ गई, जिससे आग भड़क उठी। डेकोरेशन के सामान और ज्वलनशील पदार्थ की मौजूदगी के कारण आग तेजी से फैली और काले धुएं का गुबार छा गया, जिससे श्रमिक फंस गए।

सीबीआई की बड़ी कार्रवाई : भुगतान रोककर मांगी रिश्वत, छह लाख की मांग...2 पर हुई डील, दो इंजीनियर गिरफ्तार

एजेंसी

पुणे। केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) ने भ्रष्टाचार के एक मामले में बड़ी कार्रवाई की है। सीबीआई ने मिलिट्री इंजीनियरिंग सर्विसेज (एमईएस), खड़की, पुणे में तैनात सहायक गैरिसन इंजीनियर और जूनियर इंजीनियर को शिकायतकर्ता से रिश्वत मांगने और लेते हुए गिरफ्तार किया है। आरोपियों की पहचान सुनील निकम और सुरेश म्हस्के के रूप में हुई है।

भुगतान देने के बदले में मांग रहे थे रिश्वत

सीबीआई ने 3 फरवरी को दर्ज शिकायत के आधार पर दोनों अधिकारियों के खिलाफ मामला दर्ज किया था। शिकायत में आरोप लगाया गया था कि दोनों अधिकारी 6 लाख रुपए की रिश्वत की मांग कर रहे थे। शिकायतकर्ता के पास एक निजी कंपनी के लिए पावर ऑफ अटॉर्नी है, जो एमईएस का एक अनुबंध का कार्य कर रही है। कार्य पूरा होने और कंप्लीशन सर्टिफिकेट जमा करने के बावजूद भुगतान रोक दिया गया था और रिश्वत देने का दबाव बनाया जा रहा था।

सीबीआई के जाल में फंसे इंजीनियर

सीबीआई के अनुसार, बातचीत के बाद आरोपी अधिकारियों ने रिश्वत की राशि घटाकर 2 लाख रुपए लेने पर सहमति जताई, जिसे पहली किस्त के रूप में लिया जाना था। इसके बाद सीबीआई ने 5 फरवरी को जाल बिछाया और जूनियर इंजीनियर को शिकायतकर्ता से 2 लाख रुपए की रिश्वत लेते हुए रंगेहाथों गिरफ्तार

कर लिया। रिश्वत की रकम उसके कार्यालय से बरामद की गई। इस मामले की साजिश में भूमिका पाए जाने पर असिस्टेंट गैरिसन इंजीनियर को भी गिरफ्तार किया गया। सीबीआई ने आरोपियों के आवासीय और कार्यालय परिसरों पर तलाशी के दौरान महत्वपूर्ण दस्तावेजों के साथ–साथ 1,88,500 रुपए की बिना हिसाब की नकदी भी बरामद की है। जांच एजेंसी ने बताया कि इस मामले की जांच अभी जारी है। वहीं, इससे पहले, सीबीआई ने रिश्वतखोरी के एक गंभीर मामले में एक रिटायर्ड सुपरिंटेंडेंट और दो इंस्पेक्टर के खिलाफ एफआईआर दर्ज की है। यह मामला 3 फरवरी को गुवाहाटी के एडिशनल कमिश्नर, सीजीएसटी की शिकायत पर दर्ज किया गया। आरोप है कि ये अधिकारी मिजोरम के चम्फाई में कस्टम प्रिवेंटिव फोर्स (सीपीएफ) में तैनात रहते हुए अपने पद का दुरुपयोग कर रहे थे। 2022–2023 के दौरान उन्होंने बिना किसी दस्तावेज या कानूनी प्रक्रिया के सुपारी, सिगरेट जैसे तस्करी का सामान जब्त किया और संबंधित लोगों से अवैध रिश्वत मांगी। अलग–अलग मामलों में कुल 35 लाख रुपए से ज्यादा की रिश्वत लेने के बाद जब्त सामान छोड़ दिया गया।

गोंडा में जहां भूकंप का केंद्र वहां कुछ नहीं हुआ, डीएम ने जांच के बाद बताया कोई क्षति नहीं, 9 किमी थी गहराई 3.7 तीव्रता

एजेंसी

गोण्डा। गोंडा जिले में शुक्रवार को सुबह 7 बजकर 32 मिनट 1 सेकंड पर भूकंप के झटके महसूस किए गए रिक्टर स्केल पर इसकी तीव्रता 3.7 मापी गई। भूकंप का केंद्र इटियाथोक थाना क्षेत्र का इटहिया नवजोत गांव रहा। हालांकि कम तीव्रता के कारण किसी प्रकार के जान–माल के नुकसान की कोई सूचना नहीं है। भूकंप का असर गोंडा के साथ–साथ लखनऊ तक भी महसूस किया गया। कई लोगों को झटके महसूस हुए, लेकिन इसकी तीव्रता कम होने के कारण अधिकांश लोगों को इसकी जानकारी भी नहीं हो पाई। भूकंप की सूचना मिलते ही जिलाधिकारी प्रियंका निरंजन ने तत्काल कार्रवाई की। उन्होंने गूगल मैप के माध्यम से भूकंप के मुख्य केंद्र इटहिया नवजोत गांव का पता लगाया और राजस्व विभाग के अधिकारियों को मौके पर जांच के लिए भेजा।

भारत निर्वाचन आयोग द्वारा विशेष प्रगाढ़ पुनरीक्षण-2026 की तिथियां संशोधित की गई

मतदाता सूची में दावे एवं आपत्तियां 6 मार्च, 2026 तक ली जाएंगी
नोटिस की सुनवाई तथा दावे एवं आपत्तियों का निस्तारण 27 मार्च, 2026 तक होगा
उत्तर प्रदेश की मतदाता सूची का अन्तिम प्रकाशन 10 अप्रैल, 2026 को होगा

लखनऊ ब्यूरो

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के मुख्य निर्वाचन अधिकारी श्री नवदीप रिणवा द्वारा मतदाता सूची के विशेष प्रगाढ़ पुनरीक्षण ̈(प्त)–2026 अभियान के अंतर्गत शुक्रवार को लोकभवन स्थित मीडिया सेंटर में की गई प्रेसवार्ता में बताया कि भारत निर्वाचन आयोग द्वारा अर्हता तिथि 01 जनवरी, 2026 के आधार पर प्रदेश में चल रहे विशेष गहन पुनरीक्षण की घोषित तिथियों में संशोधन करते हुए नई तिथियां जारी कर दी गई हैं। उत्तर प्रदेश में 27 अक्टूबर, 2025 से विशेष प्रगाढ़ पुनरीक्षण प्रारम्भ किया गया था। सबसे पहले 4 नवंबर, 2025 से गणना चरण प्रारम्भ हुआ और 6 जनवरी, 2026 को आलेख्य मतदाता सूची प्रकाशित हुई। 6 जनवरी, 2026 से 6 फरवरी, 2026 तक दावे और आपत्तियां जमा किये जाने हेतु एक महीने का समय रखा गया था, जिसमें मतदाता आवश्यकता अनुसार फॉर्म 6, 7 अथवा 8 भर कर जमा कर सकते थे। उन्होंने बताया कि 27 अक्टूबर, 2025 से 6 जनवरी, 2026 तक प्रदेश में लगभग 16 लाख 18 हजार से अधिक फॉर्म 6 तथा 49 हजार 399 फॉर्म 7 प्राप्त हुए थे। वहीं 6 जनवरी, 2026 से 4 फरवरी, 2026 तक मतदाता सूची में नाम सम्मिलित किये जाने हेतु लगभग 37 लाख 80 हजार फॉर्म 6 प्राप्त हुए हैं तथा मतदाता सूची से नाम विलोपित किये जाने हेतु 82 हजार 684 फार्म 7 प्राप्त हुए हैं। ओवरसीज इलेक्टर्स हेतु 1073 आवेदन प्राप्त हुए हैं। 5 फरवरी, 2026 को एक ही दिन में 3 लाख 51 हजार 745 फॉर्म 6 प्राप्त हुए हैं, जो एक दिन में प्राप्त फार्म 6 की सर्वाधिक संख्या है। फार्म 6 प्राप्त होने की गति अभी भी बढ़ रही है और बड़ी संख्या में आलेख्य मतदाता सूची में सम्मिलित न हो पाने वाले पात्र नागरिकों द्वारा फार्म 6 भरकर जमा किये जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि 27 जनवरी, 2026 को राष्ट्रीय एवं राज्यीय राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ हुई, बैठक में समस्त प्रतिनिधियों द्वारा दावा एवं आपत्ति तथा नोटिस सुनवाई अवधि को बढ़ाने का अनुरोध किया गया था, जिसके क्रम में भारत निर्वाचन आयोग से उक्त गतिविधियों हेतु समय बढ़ाने हेतु अनुरोध किया गया था। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा दावा एवं आपत्ति जमा किये जाने की

अंतिम तिथि, जो पहले 6 फरवरी, 2026 थी, उसे बढ़ाकर 6 मार्च, 2026 कर दिया गया है। इसी प्रकार, नोटिस जारी करने और सुनवाई पूरी करने की अंतिम तिथि, जो पहले 27 फरवरी, 2026 थी, उसे बढ़ाकर 27 मार्च, 2026 कर दिया गया है। अंतिम मतदाता सूची अब 10 अप्रैल, 2026 को प्रकाशित की जाएगी। आलेख्य मतदाता सूची में नाम सम्मिलित होने के बावजूद 1 करोड़ 4 लाख ऐसे मतदाता थे, जिनकी वर्ष 2003 की अतिंम मतदाता सूची से मैपिंग नहीं हुई थी। इसके अलावा, 2 करोड़ 22 लाख ऐसे मतदाता थे, जिनकी मैपिंग में तार्किक विसंगतियां थीं। कुल मिलाकर, 3 करोड़ 26 लाख मतदाताओं को नोटिस भेजे जाने थे। अब तक कुल 2 करोड़ 37 लाख नोटिस जारी किये जा चुके हैं, जिसमें से 86 लाख 27 हजार नोटिसें बीएलओ द्वारा मतदाताओं को उपलब्ध कराये जा चुके हैं। अबतक 30 लाख 30 हजार मतदाताओं की सुनवाई भी की जा चुकी हैं। विशेष प्रगाढ़ पुनरीक्षण कार्यक्रम के प्रारम्भ में 403 निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी (ईआरओ) तथा 2042 सहायक निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी (एईआरओ) नियुक्त थे। परन्तु अब 6948 अतिरिक्त सहायक निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारियों की नियुक्ति के साथ कुल 8990 एईआरओ एवं 403 ईआरओ सहित कुल 9393 अधिकारियों द्वारा मतदाताओं को नोटिस जारी कर सुनवाई की जा रही है। नोटिस प्रक्रिया की सुनवाई को अधिक सुगम और त्वरित करने के उद्देश्य से शीघ्र ही और अधिक अतिरिक्त सहायक निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारियों की नियुक्ति की जाएगी। मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने फॉर्म 7 के बारे में बताया कि यह किसी व्यक्ति का नाम हटाने या किसी के दावे पर आपत्ति करने के लिए भरा जाता है। आपत्तिकर्ता को फार्म 7 भरते समय अपना नाम, वोटर आईडी कार्ड नंबर, जिस व्यक्ति के विरूद्ध आपत्ति की जा रही है उसका नाम और आपत्ति का कारण बताना होता है। फॉर्म 7 को बड़ी संख्या में (बल्क में) स्वीकार नहीं किया जाता है। राजनैतिक दलों के बूथ लेवल एजेंट फॉर्म 7 एक दिन में अधिकतम 10 जमा कर सकते हैं, साथ ही उन्हें अंडरटेकिंग भी देनी होगी। फॉर्म 7 प्राप्त होने पर, ईआरओ द्वारा आपत्तिकर्ता और जिस व्यक्ति के खिलाफ आपत्ति की गई है, दोनों को नोटिस भेजा जाता है। नोटिस प्राप्त होने के बाद सुनवाई होती है, जिसमें साक्ष्य प्रस्तुत किए जाते हैं, और उसके बाद ईआरओ द्वारा नियमानुसार निर्णय लिया जाता है। किसी भी पात्र मतदाता का नाम बिना पूरी जांच के नहीं काटा जाएगा। उन्होंने बताया कि आलेख्य मतदाता सूची के प्रकाशन 6 जनवरी, 2026 से 4 फरवरी, 2026 तक बूथ लेवल एजेंटों के माध्यम से कुल 37 हजार 789 फार्म 6 तथा 1567 फॉर्म 7 प्राप्त हुए हैं। सभी मतदाता आलेख्य मतदाता सूची को भारत निर्वाचन आयोग और मुख्य निर्वाचन अधिकारी, उत्तर प्रदेश की वेबसाइट पर देख सकते हैं। सभी राजनैतिक दलों के बूथ लेवल एजेंटों को भी यह सूची दी गई है। मतदाताओं की सुविधा हेतु समस्त मतदान केन्द्रों पर मतदाता सहायता केन्द्र स्थापित करने के निर्देश दिये गये हैं। बूथ लेवल अधिकारी (बीएलओ) प्रति कार्य दिवस पूर्वाह्न 10 बजे से 12 बजे मध्याह्न तक मतदान केन्द्रों पर उपलब्ध रहेंगे। बीएलओ के पास पिछले एसआईआर (वर्ष 2003) की अंतिम मतदाता सूची, दिनांक 6 जनवरी, 2026 को प्रकाशित आलेख्य मतदाता सूची के साथ ही अनुपस्थित, स्थानान्तरित, मृतक, दोहरी प्रविष्टि तथा गणना प्रपत्र पर हस्ताक्षर न करने वाले मतदाताओं (एएसडीडीआर) की सूची भी उपलब्ध रहेगी। इसके अतिरिक्त प्रत्येक बीएलओ के पास 50–50 की संख्या में फार्म 6, 7 एवं 8 तथा घोषणा पत्र की प्रतियों की उपलब्धता भी सुनिश्चित किये जाने के निर्देश दिये गये हैं। मुख्य निर्वाचन अधिकारी द्वारा पात्र नागरिकों से अनुरोध किया गया कि वे अभी भी अपना नाम मतदाता सूची में सम्मिलित करा सकते हैं, खासकर महिलाएं और युवा। उनके द्वारा फॉर्म 6 भरते समय कुछ महत्वपूर्ण सावधानियां भी बरतने की सलाह दी गई जैसे, नाम की स्पेलिंग (हिंदी और अंग्रेजी दोनों में) सही होनी चाहिए, आधार कार्ड से मेल खानी चाहिए, पता स्पष्ट और पूरा होना चहिए और मोबाइल नंबर भी अवश्य देना चाहिए ताकि मतदाता पहचान पत्र आसानी से डाउनलोड किया जा सके।

संपादकीय

प्रधानमंत्री का डर और संसद की गरिमा

संसद सत्र को सत्ता पक्ष की तरफ से ही बाधित करना, एक साथ विपक्ष के सौ से ज्यादा सांसदों का निलंबन, सदन के भीतर एक अल्पसंख्यक सांसद के लिए अपशब्दों का प्रयोग, पूर्व प्रधानमंत्रियों के लिए आपत्तिजनक भाषा का इस्तेमाल, महिला सांसदों के लिए अभद्र टिप्पणियां, संसद के भीतर रंगीन धुआं उड़ाना, संसद में हिंदू पंडितों से पूजा–पाठ करवाकर धर्मनिरपेक्षता की बलि चढ़ाना और सुबह सत्र संचालित करा रहे राज्यसभा सभापति का अचानक शाम को स्वास्थ्य कारणों से इस्तीफा और उन्हें औपचारिक विदाई तक न देना, मोदी सरकार में संसदीय परंपराओं और मर्यादा को किस तरह बार–बार तोड़ा गया, ये उसके चंद उदाहरण हैं। लेकिन अब तो संसदीय इतिहास को मुंह चिढ़ाते हुए मोदी सरकार ने एक ऐसा कारनामा कर दिखाया है, जिसका अगला पायदान तानाशाही ही लगता है।राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव प्रधानमंत्री और नेता प्रतिपक्ष की तरफ से चर्चा के बिना ही पारित करा दिया गया। पाठक जानते हैं कि 2 और 3 फरवरी को राहुल गांधी को सत्तापक्ष ने पूरा भाषण नहीं देने दिया। पूर्व सेनाध्यक्ष जनरल मनोद मुकुंद नरवणे की किताब के कुछ अंश कारवां पत्रिका में प्रकाशित हुए थे, जिसे राहुल गांधी ने सत्यापित करने के बाद उद्धृत करना चाहा लेकिन सत्ता पक्ष की टोकाटाकी के बाद लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला ने उन्हें नियम 349 का हवाला देते हुए अनुमति नहीं दी। इसके बाद राहुल गांधी ने कहा भी कि मैं बिना उद्धृत किए ही अपनी बात रखता हूं, लेकिन जैसे ही वे चीन पर बोलने लगे, सत्ता पक्ष की घबराहट देखकर आसंदी ने उन्हें बोलने नहीं दिया। इसके बाद विपक्ष के किसी सांसद ने भाषण नहीं दिया। राहुल गांधी तो सदन में बहादुरी के साथ डटे रहे, लेकिन प्रधानमंत्री मोदी ने कायरता की नयी मिसाल देश के सामने पेश की। वे संसद आए और फिर वापस लौट गए। बुधवार शाम पांच बजे उनका भाषण लोकसभा में निर्धारित था, लेकिन लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला का कहना है कि उन्होंने ही प्रधानमंत्री को सदन में आने से मना किया था। उन्होंने बड़ा दावा करते हुए कहा कि ऐसा इसलिए किया गया क्योंकि कांग्रेस के सांसद उन पर शारीरिक हमला कर सकते थे। इस बीच हंगामे के चलते लोकसभा की कार्यवाही को शुक्रवार तक के लिए स्थगित कर दिया गया है। ओम बिड़ला ने कहा कि अगर कोई घटना हो जाती तो लोकतंत्र की मर्यादा तार–तार हो जाती। उसे टालने के लिए मैंने प्रधानमंत्री से आग्रह किया कि वह सदन में ही ना आएं। अंत में उनके ही भाषण के बिना ही धन्यवाद प्रस्ताव को मंजूर करने का फैसला हुआ। हालांकि संसद टीवी में दिख रहा है कि कांग्रेस की महिला सांसद राहुल गांधी को बोलने से रोकने का विरोध कर रही थीं और उनके हाथों में पोस्टर थे। उनका इरादा प्रधानमंत्री मोदी पर हमले का नहीं था। लेकिन अब उसी घटना की वजह से प्रधानमंत्री के बुधवार को लोकसभा में न आने की सफाई दी जा रही है।तो कहा जा सकता है कि प्रधानमंत्री मोदी हाथ में पोस्टर थामी हुई चंद महिला सांसदों से डर गए। लेकिन सोचने वाली बात यह है कि क्या सरकार ने इस पर कोई रिपोर्ट थाने में दर्ज कराई है। किन–किन महिला सांसदों पर सरकार का आरोप है, और उन आरोपों के लिए सबूत क्या हैं, यह सब देश को मालूम होना चाहिए, क्योंकि सवाल नरेन्द्र मोदी नहीं प्रधानमंत्री की सुरक्षा का है। क्या इसके बाद अमित शाह और अजित डोभाल को अपने पदों से इस्तीफा नहीं दे देना चाहिए, क्योंकि जो संसद में प्रधानमंत्री को सुरक्षित न रख पाएं, वो देश की सुरक्षा का क्या खाक करेंगे। वैसे यह भी शायद पहली बार ही होगा कि प्रधानमंत्री की सुरक्षा पर संसद के भीतर ही खतरा बने। नरेन्द्र मोदी को अब देश के सामने एक सूची सौंप ही देनी चाहिए कि उन्हें किन–किन बातों से डर लगता है। इनमें चीन, डोनाल्ड ट्रंप, राहुल गांधी, कुछ नाम तो जाहिर हैं, अब शायद विपक्ष की महिला सांसदों का नाम भी जुड़ जाएं, इसके आगे मोदी और भी चीजें जोड़ सकते हैं। वैसे प्रधानमंत्री के संसद में भाषण न देने की असल वजह राहुल गांधी ही लग रहे हैं। बुधवार को राहुल गांधी संसद में मनोज नरवणे की किताब लेकर आए थे, और पत्रकारों से उन्होंने कहा था कि वे इसे प्रधानमंत्री को सौंपेंगे, ताकि वे खुद पढ़ें कि क्या लिखा हुआ है। इस सुपुर्दगी से बचने के लिए ही प्रधानमंत्री मोदी लोकसभा से गायब हो गए।बुधवार को संसद में भाजपा सांसद निशिकांत दुबे को ढाल बनाने का पैंतरा भी मोदी के लिए असरकारी नहीं हुआ, बल्कि उसका उल्टा असर हुआ। निशिकांत दुबे ने कम से कम छह किताबों के हवाले से पं.नेहरू, इंदिरा गांधी, राजीव गांधी, सोनिया गांधी सब पर कीचड़ उछालने की कोशिश की, लेकिन वो आसमान में थूकने जैसी साबित हुई। निशिकांत दुबे ने नेहरू–गांधी परिवार के लिए अय्याशी, मक्कारी, भ्रष्टाचारी जैसे शब्दों का इस्तेमाल कर हमले किए। इसके बाद गुरुवार को वे राहुल गांधी के कपड़ों पर आ गए कि वे टी शर्ट और ढीली–ढाली पतलून में आ जाते हैं, उनके मन में खादी के लिए सम्मान नहीं है, तो वे संसद का क्या सम्मान करेंगे।

राशिफल

मेष :– नकारात्मक चिन्ताओं को त्याग कर अपनी क्षमताओं पर भरोसा करें। नौकरी–पेशे में अधिकारियों व सहकर्मियों के सहयोग से वातावरण सुखद होगा। राजनैतिक क्षेत्र के ब्यक्तियों का सहयोग प्राप्त होगा।

बृषभः– शासन–सत्ता कें लोगों के साथ निकटता बढे.गी। नियोजित परिश्रम द्वारा कार्य सिद्धी के आसार बनेंगे। पुराने संबंधों से लाभ संभव। परिवारिक वातावरण सुखद व उत्साहपूर्ण होगा।

मिथुनः– कठिन एवं विषम परिस्थितियों के मध्य परिश्रम व लगन से प्रगति के ओर अग्रसर होंगे। समाजिक सक्रीयता से मान–प्रतिष्ठा में बृद्धि होगी। घरेलू दायित्वो के प्रति आपकी महत्ता बढे.गी।

कर्कः– कुछ भौतिक आकांक्षाएं अपनी सार्थकता हेतु मन को उद्वेलित करेंगी। निकटस्थ सम्बन्धों में भावनात्मक अपेक्षाएं कष्टकारी हो सकती है। तामसी व गैर कायरे पर आकर्षित मन पर अंकुश लगावें।

सिंहः– कुछ नई इच्छाएं बलवती होंगी। प्रयासरत् क्षेत्रों में संघर्ष संभव परन्तु निराशावादी बिचारों को मन में स्थान न दें। किसी बड़े आयोजन हेतु समुचित ब्यवस्था के लिए मन प्रयत्नशील होगा।

कन्याः– नई सफलताओं से खुद की क्षमताओं का ऐहशास होगा। जीविका क्षेत्र में अवरोधों से मन में निराशा संभव भौतिक आकांक्षाओं की पूर्ति में ब्यय की अपेक्षित है। सन्तति एवं सन्तानोत्पत्ति के लिए प्रयास सार्थक होंगे।

तुलाः– किसी नयी दिशा में सकारात्मक सोच अवश्य रंग लाएगी। पुरानी घटनाओं के स्मरण से मन को कष्ट संभव। दुबिधाओं को त्याग कर सही व स्वच्छ योजनाओं पर केन्द्रित हों।

वृश्चिकः– कुछ महत्वपूर्ण जिम्मेदारियाँ मन पर प्रभावी होंगी। घरेलू कायरे में ब्यस्तता बढेगी। परिजनों के सहयोग से मन उत्साहित होगा। हंसमुख स्वभाव से आस–पास वातावरण में प्रसन्नता बिखेरेंगे।

धनुः– सम्बन्धों में ब्यवहारकुशल बनें। समाजिक व मांगलिक कार्यक्रमों में आपकी भागीदारी संभव। कुछ महत्वपूर्ण प्रयत्न की सार्थकता आप में नए उत्साह का संचार करेगा।

मकरः– बिद्यार्थियों के लिए ग्रहों की अनुकूलता लाभप्रद होगी। कुछ महत्वाकांक्षी योजनाएं सार्थक होगी। नवीन आशाएं नवीन उत्साह लाएंगी। कार्य क्षेत्र में सम्बन्धों का भरपूर लाभ मिलेगा।

कुंभः– अन्तमरुखी स्वभाव को त्याग बहिरमुखी बनें। कुछ महत्वपूर्ण अभिलाषाओं की पूर्ति के आसार हैं। परिजनों के सुख–दुख के प्रति मन चिन्तित होगा। कार्य क्षेत्र में ब्यस्तता बढे.गी।

मीनः– पुरानी समस्याओं पर बिजय प्राप्त कर सुखद अनुभूति करेंगे। ग्रहों की अनुकूलता से कोई अवरोधित कार्य हल होने के आसार बनेंगे।समुचित परिश्रम करने में असमर्थ मन परेशान होगा।

इलाज के नाम पर लूट

देश की हॉस्पिटल व्यवस्था में मुनाफ़ाखोरी, इंश्योरेंस और सरकारी व्यवस्था का दुरुपयोग और आम आदमी की बेबसी

–डॉ० प्रियंका सौरभ

आज देश की हॉस्पिटल व्यवस्था जिस हालत में पहुँच चुकी है, वह किसी एक व्यक्ति की पीड़ा नहीं, बल्कि करोड़ों आम नागरिकों का साझा अनुभव बनती जा रही है। इलाज, जो कभी सेवा और संवेदना का क्षेत्र माना जाता था, अब धीरे–धीरे मुनाफ़े का ऐसा संगठित उद्योग बन चुका है, जहाँ इंसान की बीमारी से ज़्यादा उसकी जेब, उसका इंश्योरेंस और उसका सामाजिक दर्जा देखा जाता है। बड़े–बड़े निजी अस्पतालों की चमक–दमक, एयर–कंडीशन्ड गलियारे और आधुनिक मशीनें बाहर से भले ही तरक्की का भ्रम पैदा करती हों, लेकिन भीतर एक ऐसी व्यवस्था काम कर रही है जो आम आदमी के लिए किसी आर्थिक यातना से कम नहीं है। आज अगर कोई साधारण व्यक्ति किसी बड़े अस्पताल में इलाज कराने जाता है, तो सबसे पहला सवाल उसकी बीमारी को लेकर नहीं, बल्कि उसकी भुगतान क्षमता को लेकर होता है। रिसेप्शन पर, एडमिशन काउंटर पर या डॉक्टर से मिलने से पहले ही यह पूछा जाता है कि आपके पास हेल्थ इंश्योरेंस है या नहीं, आप सरकारी नौकरी में हैं या प्राइवेट, कैश में भुगतान करेंगे या कैशलेस। इस एक सवाल के जवाब से मरीज का पूरा इलाज तय हो जाता है। जैसे ही यह स्पष्ट होता है कि मरीज इंश्योरेंस कवर में है या किसी सरकारी/कॉर्पोरेट स्कीम के अंतर्गत आता है, अस्पताल का रवैया पूरी तरह बदल जाता है। इलाज की जगह एक योजनाबद्ध कमाई की प्रक्रिया शुरू हो जाती है। इंश्योरेंस होने का मतलब होना चाहिए सुरक्षा, लेकिन आज के समय में यह कई निजी अस्पतालों के लिए खुली छूट का लाइसेंस बन चुका है। ज़रूरत से ज़्यादा महँगी दवाइयाँ लिख दी जाती हैं, जिनके सस्ते और समान प्रभाव वाले विकल्प आसानी से उपलब्ध होते हैं। ऐसे–ऐसे टेस्ट कराए जाते हैं जिनका न तो बीमारी से सीधा संबंध होता है और न ही इलाज की दिशा तय करने में कोई ठोस भूमिका। एमआरआई, सीटी स्कैन, बार–बार की ब्लड जाँच, स्पेशल पैनल टेस्टकृसब कुछ "रूटीन" के नाम पर जोड़ दिया जाता है। मरीज और उसके परिजन डॉक्टर की बात पर आँख मूँदकर भरोसा करते हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि डॉक्टर उनके भले के लिए ही ऐसा कर रहे हैं, जबकि हकीकत कई बार इससे उलट होती है। सबसे चिंताजनक स्थिति तब बनती है, जब मरीज की हालत में सुधार हो जाने के बावजूद उसे अस्पताल में रोके रखा जाता है। जो मरीज सामान्य परिस्थितियों में चार–पाँच दिन में डिस्चार्ज हो सकता है, उसे जानबूझकर दस–पंद्रह दिन तक भर्ती रखा जाता है। कारण साफ़ हैकृ जितने ज़्यादा दिन भर्ती, उतना ज़्यादा बिल। बेड चार्ज, नर्सिंग चार्ज, डॉक्टर विज़िट, दवाइयाँ, कंज़्यूमेबल्सकृहर दिन के साथ बिल फूलता चला जाता है। मरीज की सेहत से ज़्यादा ध्यान अब इस बात पर होता है कि इंश्योरेंस क्लेम की सीमा पूरी तरह इस्तेमाल हो जाए। इस पूरी प्रक्रिया में आम आदमी सबसे ज़्यादा असहाय होता है। उसे न तो मेडिकल ज्ञान होता है और न ही अस्पताल की जटिल बिलिंग प्रणाली को समझने की क्षमता। अगर कोई सवाल करता है तो उसे डराया जाता है कि इलाज प्रभावित हो सकता है, या फिर तकनीकी शब्दों में ऐसा उलझा दिया जाता है कि वह चुप रह जाना ही बेहतर समझता है। कई बार मरीज के परिजन यह भी महसूस करते हैं कि उन्हें जानबूझकर भ्रम में रखा जा रहा है, लेकिन बीमार व्यक्ति की जान दाँव पर लगी हो तो विरोध करने का साहस बहुत कम लोग कर पाते हैं। सरकारी अस्पतालों की स्थिति भी कोई बहुत संतोषजनक नहीं है। वहाँ इलाज सस्ता या मुफ्त तो है, लेकिन भीड़, संसाधनों की कमी और अव्यवस्था के कारण मरीजों को घंटों लाइन में लगना पड़ता है। बेड की कमी, स्टाफ की कमी और दवाइयों की अनुपलब्धता के चलते कई लोग मजबूरी में निजी अस्पतालों की ओर रुख करते हैं। इस मजबूरी का फायदा निजी अस्पताल बखूबी उठाते हैं। एक तरह से सरकारी व्यवस्था की कमजोरी, निजी लूट को और मज़बूत कर रही है। स्वास्थ्य बीमा योजनाएँ, जिनका उद्देश्य आम आदमी को आर्थिक सुरक्षा देना था, आज कई मामलों में उल्टा असर डाल रही हैं। इंश्योरेंस कंपनियाँ और अस्पतालों के बीच एक अघोषित गठजोड़ सा दिखाई देता है, जिसमें मरीज सिर्फ़ एक माध्यम बनकर रह जाता है। फर्जी या बढ़ा–चढ़ाकर बनाए गए बिल, अनावश्यक प्रक्रियाएँ और पैकेज सिस्टम के नाम पर तयशुदा लूटकृये सब अब अपवाद नहीं, बल्कि आम चलन बनते जा रहे हैं। दुखद यह है कि इस पूरे खेल में नैतिकता कहीं पीछे छूट जाती है। यह भी देखने में आता है कि एक ही बीमारी के इलाज का

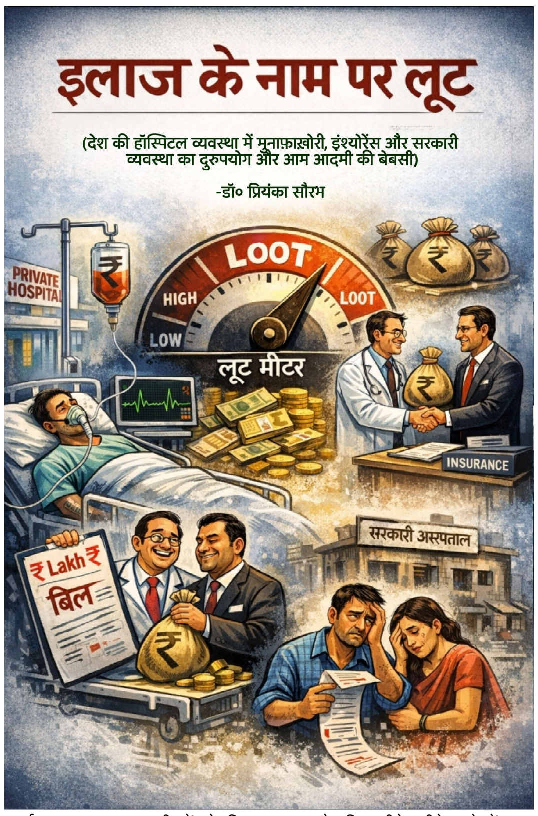

खर्च अलग–अलग मरीजों के लिए अलग–अलग होता है। जिसके पास इंश्योरेंस नहीं है, उसके लिए इलाज "कम खर्च" में समेट दिया जाता है, और जिसके पास इंश्योरेंस है, उसके लिए वही बीमारी कई गुना महँगी हो जाती है। इससे बड़ा विरोधाभास और क्या हो सकता है? बीमारी तो एक–सी है, इलाज भी लगभग वही है, लेकिन बिल में ज़मीन–आसमान का अंतर सिर्फ़ भुगतान के स्रोत के कारण। इस स्थिति का सबसे भयावह पहलू यह है कि धीरे–धीरे लोगों का चिकित्सा व्यवस्था से भरोसा उठता जा रहा है। डॉक्टर, जिन्हें कभी भगवान का दर्जा दिया जाता था, अब शक की नज़र से देखे जाने लगे हैं। हर पर्ची, हर टेस्ट और हर सलाह पर सवाल उठने लगा है कि यह ज़रूरी है या सिर्फ़ कमाई का ज़रिया। यह अविश्वास पूरे समाज के लिए खतरनाक है, क्योंकि बिना भरोसे के कोई भी व्यवस्था लंबे समय तक टिक नहीं सकती। सरकार की ज़िम्मेदारी यहाँ बेहद अहम हो जाती है। स्वास्थ्य को सिर्फ़ बाज़ार के भरोसे नहीं छोड़ा जा सकता। सख़्त रेगुलेशन, पारदर्शी बिलिंग सिस्टम और प्रभावी निगरानी के बिना निजी अस्पतालों पर अंकुश लगाना मुश्किल है। इलाज की दरों, बेड चार्ज, टेस्ट और दवाइयों की कीमतों पर स्पष्ट और कड़ाई से लागू होने वाले नियम होने चाहिए। इंश्योरेंस क्लेम की प्रक्रिया में स्वतंत्र ऑडिट और शिकायत निवारण की मजबूत व्यवस्था अनिवार्य होनी चाहिए, ताकि मरीज को न्याय मिल सके। इसके साथ–साथ सरकारी अस्पतालों को मज़बूत करना भी उतना ही ज़रूरी है। जब तक आम आदमी को भरोसेमंद, सुलभ और गुणवत्तापूर्ण सरकारी स्वास्थ्य सेवाएँ नहीं मिलेंगी, तब तक वह निजी अस्पतालों की लूट का शिकार होता रहेगा। स्वास्थ्य को खर्च नहीं, बल्कि निवेश मानकर देखना होगाकृनिवेश, जो देश की सबसे बड़ी पूंजी, यानी उसके नागरिकों के जीवन में किया जाता है। आख़िर में सवाल सिर्फ़ व्यवस्था का नहीं, बल्कि सोच का भी है। क्या हम इलाज को सिर्फ़ मुनाफ़े का साधन मानने को तैयार हैं, या फिर उसे इंसानियत और सेवा से जोड़कर देखना चाहते हैं? अगर समय रहते इस दिशा में ठोस कदम नहीं उठाए गए, तो वह दिन दूर नहीं जब बीमारी से ज़्यादा डर इलाज के बिल से लगने लगेगा। और जब इलाज डर का कारण बन जाए, तब समझ लेना चाहिए कि व्यवस्था गंभीर रूप से बीमार हो चुकी हैकृऔर उसका इलाज अब टालना, पूरे समाज के लिए घातक साबित हो सकता है।

संभाजी की वीरता की कहानी है फिल्म छावा

–अर्चित सक्सेना

भारतीय वीर सपूत छत्रपति शिवाजी महाराज की वीर गाथाएं तो हम सब जानते हैं लेकिन,उनके सुपुत्र संभाजी महाराज की वीर गाथा कुछ अनसुनी और अनकही सी ही है। हमारी पीढ़ी तो विशेष कर उनकी वीरता की गाथा से अनजान ही है। स्वतंत्रता के लिए हमारे देश में अनगिनत वीरों ने बलिदान दिया है। हमारी पाठ्यपुस्तकों में जो पढ़ाया गया उसमें मुगलों के तो दास दासियों का भी विस्तार से वर्णन है लेकिन उसी समय के अनगिनत वीर योद्धाओं को तो मानो गुमनामी में धकेल दिया गया है। यह तो उन लेखकों और इतिहासकारों की अनुकंपा और अपने राष्ट्र के प्रति अगाध प्रेम रहा जो उन्होने इतिहास के उन अनसुने नायकों के बारे में लिखने का जोखिम लिया और ऐसे वीर सपूतों की वीरगाथाएं जीवंत रह पायी। भारतीय इतिहास के ऐसे ही वीर योद्धा थे छत्रपति शिवाजी महाराज के पुत्र संभाजी महाराज। वर्षों पहले संभाजी महाराज पर मराठी के सुप्रसिद्ध लेखक शिवाजी सावंत ने ष्छावाष नाम से उपन्यास लिखा था। अब उस उपन्यास पर शानदार फिल्म बनी है छावा। संभाजी महाराज भी छत्रपति शिवाजी की तरह ही बलशाली, साहसी, पराक्रमी और कर्मठ शासक व योद्धा थे। इस पर मराठी के जाने–माने लेखक शिवाजी सांवत ने गहन शोध के पश्चात वृहत उपन्यास लिखा जिस पर छावा फिल्म आधारित है। इतना बड़ी कहानी और घटनाओं को मात्र ढ़ाई–तीन घंटे में समेटना कोई आसान काम नहीं था लेकिन, निर्देशक ने अपनी सूझबूझ और समझ से कुछ चुनिंदा घटनाओं को लेकर सारा कथानक प्रस्तुत किया जो दर्शनीय भी है। मराठी शब्द छावा का अर्थ है शेर का बच्चा।विक्की कौशल ने अपने अभिनय में छावा अर्थात शेर का बच्चा शब्द को ऐसा आत्मसात किया कि, ज्यादातर समय दर्शक दहलते हुए ही नजर आए। वैसा दिखने के लिए विकी ने अपने शरीर पर भी काम किया तो बलशाली भी दिखाई दिए हैं। रश्मिका मंदाना, अक्षय खन्ना, आशुतोष राणा,

दिव्या दत्ता सभी ने अपनी भूमिकाओं के साथ न्याय करने का प्रयास किया।मुख्य अभिनेता के बाद किसी ने दर्शकों का ध्यान अपनी तहफ आकर्षित किया तो वे औरंगजेब के किरदार में नजर आए अक्षय खन्ना ही है। इस फिल्म का सबसे सशक्त पहलू हिन्दवी स्वराज्य की अवधारणा को स्पष्ट करना और यह बताना है कि, इसके लिए हमारे देश के वीरों ने अपनी जान की बाजी लगा दी है। लेकिन तब भी देश में गद्दारों की कमी नहीं थी। संभाजी महाराज भी औरंगजेब की गिरफ्त में अपने करीबी और रिश्ते में उनके अपने साले की गद्दारी की वजह से आए। जिन्होंने राज्य की लालसा में वीर मराठा संभाजी को धोखा देकर पकड़वा दिया था। इस फिल्म का सबसे दमदार और प्रभावी दृश्य वह है जब औरंगजेब धोखे से कैद किये संभाजी महाराज से कहता है कि, हमारी तरफ आ जाओ ऐश से जीवन गुजारोगे, बस अपना धर्म बदलना पड़ेगा तब संभाजी जो जबाव देते हैं वह सुनने व समझने लायक है। वे कहते हैं हमारी तरफ आ जाओ सारी सुख सुविधाएं मिलेंगी और धर्म भी नहीं बदलना पड़ेगा । फिल्म का यह इतना जबरदस्त संदेश है जो हर किसी को ग्रहण करना चाहिए क्योंकि, हिन्दवी स्वराज्य की असल संकल्पना यही है। जहां किसी भी धर्म या जाति से कोई विरोध नहीं है।औरंगजेब का सम्प्रदाय अपना मुल्क बनाने सबको एक रंग में रंगने पर अड़ा रहा जबकि, हिन्दू समाज विविधता में एकता के सिद्धांत पर चलता हुआ आगे बढ़ रहा है। औरंगजेब ने संभाजी पर जो अत्याचार किए उसकी एक बानगी भी यह फिल्म दिखाती फिर चाहे संभाजी महाराज के हाथ के नाखूनों को निर्दयता से नोंचना हो या उनके शरीर के जख्मों पर नमक डालना हो या उनकी आंखों में दहकती हुई लोहे की सलाखें भरना या उनकी जुबान को काटना। इतनी निर्ममता को भी संभाजी महाराज जगदम्बा भवानी का नाम जपते हुए सहन कर लेते हैं। संभाजी के रुप में विकी ने इस दृश्य को जीवंत रुप में प्रस्तुत किया है। इसके अलावा फिल्म में छत्रपति संभाजी महाराज के नौ साल के शासन, उनका मंत्रिमंडल, उनके सलाहकार, उनके सेनानायक ,उनकी अनोखी युद्ध नीतियां और पारिवारिक पृष्ठभूमि को भी अल्प ही सही परंतु दर्शाने का भरपूर प्रयास किया है। मुगलों ने किस तरह से हमारे राजा–महाराजाओं को कष्ट दिए यह इतिहास में नहीं पढ़ाया गया वहां केवल, अकबर महान बताया जाता रहा तो हम सब भी वही सच मानते रहे जबकि, महान तो वे सभी योद्धा रहे जिन्होंने प्राण दे दिए मगर, धर्म और राष्ट्रभक्ति से समझौता नहीं किया। यह देखने के लिए भी इस फिल्म को देखा जाना चाहिए ताकि, सबको वास्तविक इतिहास भी पता चल सके। विक्की कौशल की छावा ने ओपनिंग डे पर धमाल मचा दिया है। इस पीरियड ड्रामा एक्शन ने पहले दिन ना सिर्फ उम्मीद से कहीं अधिक कमाई की है, बल्कि 2025 में ओपनिंग डे पर सबसे अधिक बिजनेस करने वाली हिंदी फिल्म भी बन गई है। छत्रपति शिवाजी महाराज के बेटे संभाजी महाराज के जीवन पर लक्ष्मण उतेकर के डायरेक्शन में बनी छावा विक्की कौशल के करियर की पहली फिल्म है, जिसने ओपनिंग डे पर 10 करोड़ से अधिक का बिजनेस किया है। इस फिल्म का बजट 130 करोड़ रुपये बताया जा रहा है। इस फिल्म ने रिलीज से पहले ही 13.79 करोड़ रुपये की तगड़ी एडवांस बुकिंग की थी। बॉक्स ऑफिस कलेक्शन की एक रिपोर्ट के मुताबिक, शुक्रवार 14 फरवरी को छावा ने भारतीय बॉक्स ऑफिस पर शानदार 31करोड़ रुपये का नेट कलेक्शन किया है। शुक्रवार को छावा के शोज में सुबह से ही अच्छी खासी भीड़ नजर आई। देशभर में 3500 से अधिक स्क्रीन्स पर यह फिल्म रिलीज हुई है। छावा की शानदार ओपनिंग को देखते हुए अब लग रहा है कि यह फिल्म 100 करोड़ क्लब में एंट्री कर लेगी। साल 2025 में छावा से पहले ओपनिंग डे पर सबसे अधिक कमाई करने वाली फिल्म अक्षय कुमार की स्काई फोर्स थी, जिसने 12.25 करोड़ रुपये का बिजनेस किया था। विक्की कौशल की फिल्म ने इससे 153: अधिक कमाई की है। यही नहीं, छावा ने पहले दिन की कमाई के मामले में 2024 की चार बड़ी फिल्मों स्त्री 2, भूल भुलैया 3, सिंघम अगेन और पुष्पा 2 को छोड़कर बाकी सभी को पीछे छोड़ दिया है। वैलेंटाइन वीक में भी किसी फिल्म की यह सबसे बड़ी ओपनिंग है। इससे पहले रणवीर सिंह और आलिया भट्ट की गली बॉय ने 2019 में वैलेंटाइन वीक में सबसे अधिक 19.40 करोड़ रुपये की ओपनिंग ली थी। विकी की छावा ने गली बॉय से 59.79: अधिक का कारोबार किया है। ओपनिंग डे पर सबसे अधिक कमाई करने वाली पीरियड ड्रामा फिल्मों की फेहरिस्त में भी छावा ने ओपनिंग डे पर सबसे अधिक कमाई की है। संभाजी महाराज की कहानी को महाराष्ट्र में भी जबरदस्त रेस्पॉन्स मिला है। छावा की धमाकेदार ओपनिंग का जलवा सिर्फ कमाई तक नहीं है। इसने टिकटों की बिक्री में भी धूम मचाई है। प्रमुख टिकटिंग प्लेटफॉर्म बुक माय शो के मुताबिक, विक्की कौशल की फिल्म ने एनिमल और गदर 2 को छोड़कर बाकी हर हिंदी फिल्म की ओपनिंग डे टिकट बिक्री को पीछे छोड़ दिया है। छावा के लिए बीएमएस से कुल 14 लाख टिकटों की बिक्री पहले दिन के लिए हुई । इसमें से करीब 5 लाख टिकट रिलीज के दिन बिके । यह 2025 में अभी तक का सबसे बड़ा आंकड़ा है। रिलीज के दिन सबसे अधिक टिकटों की बिक्री के मामले में रणबीर कपूर की एनिमल सबसे आगे है, जिसके 8.90 लाख टिकट बिके थे। गदर 2 के लिए 6.70 लाख टिकट बीएमएस के जरिए बिके थे। टिकटिंग प्लेटफॉर्म के मुताबिक, एक घंटे में सबसे अधिक टिकट बेचने के मामले में भी छावा ने बाजी मारी है। एक घंटे में इसके सबसे ज्यादा 42.98 हजार टिकट बिके। छावा ने विक्की कौशल को भी उनके करियर की सबसे बड़ी ओपनिंग दी है। इससे पहले उनकी ब्लॉकबस्टर श्उरी द सर्जिकल स्ट्राइकश ने ओपनिंग डे पर सबसे अधिक 8.20 करोड़ रुपये कमाए थे। लेकिन लेकिन छावा ने इससे करीब 4 गुना अधिक बिजनेस किया है। यह उनके करियर की पहली फिल्म है, जिसने पहले दिन 10 करोड़ से अधिक का बिजनेस किया है।

पंथक वोटरों के लिए तय करना मुश्किल कि असैंबली चुनावों में वोट दें या नहीं

–इकबाल सिंह चन्नी

2027 के पंजाब असैंबली के लिए पंथक मामले एक केंद्रीय मुद्दा बन गए हैं। सभी राजनीतिक दल पंथक एजेंडे को आगे रखकर चुनाव जीतने की कोशिश कर रहे हैं। सभी पार्टियां खुद को पंथक सपोर्टर और दूसरी पार्टियों को पंथ विरोधी बताने में कोई कसर नहीं छोड़ रहीं। लेकिन इस पूरे परिदृश्य में, लगभग सभी पाध्टयों की हालत 'हमाम में सब नंगे' जैसी हो गई है क्योंकि इस समय सभी मुख्य पार्टियों पर पंथक हितों के खिलाफ काम करने का आरोप लग रहा है। अगर हम मौजूदा राजनीतिक दलों का विश्लेषण करें, तो सभी पार्टियों पर पंथक मुद्दों पर किसी पर कुछ कम और किसी पर कुछ ज्यादा आरोप लग रहे हैं। यह सब समझने के लिए, आइए सभी प्रमुख पार्टियों कांग्रेस, भाजपा, 'आप' और अकाली दल बादल के पंथक मुद्दों के प्रति पिछले बर्ताव का विश्लेषण करते हैं। देश की सबसे पुरानी पार्टी और सबसे लंबे समय तक देश और राज्यों पर राज करने वाली कांग्रेस की बात करें, तो सबसे ज्यादा आरोप इसी पार्टी पर लगते हैं। देश आजाद होने के बाद, जब कांग्रेस सत्ता में आई, तो सिखों यानी पंथ के साथ भेदभाव का दौर शुरू हो गया। अगर इतिहास देखें, तो देश आजाद होने के बाद, सिखों से किए गए वादों को भूलकर, कांग्रेस ने सिखों के साथ भेदभाव करना शुरू कर दिया, जिसमें पंजाब के गवर्नर द्वारा सिखों को क्रिमिनल कम्युनिटी घोषित करना, भाषा के आधार पर पंजाबी राज्य बनाने से मना करना, पंजाब की राजधानी चंडीगढ़ को केंद्र शासित बनाना, पानी के बंटवारे में पंजाब के साथ भेदभाव करना, पंजाब की चुनी हुई सरकारों को बार–बार तोड़कर राष्ट्रपति शासन लागू करना, श्री अमृतसर के दरबार साहिब में श्री अकाल तख्त पर हमला करना और उस समय की प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी की हत्या के बाद दिल्ली और देश के अलग–अलग हिस्सों में सिखों का कत्लेआम करना और सिखों के कातिलों को सजा देने की बजाय उन्हें ऊंचे पद देना शामिल था। लेकिन कांग्रेस पार्टी इन आरोपों के जवाब में ज्ञानी जैल सिंह को राष्ट्रपति, स. बूटा सिंह को गृहमंत्री, स. मनमोहन सिंह को देश का प्रधानमंत्री बनाने का श्रेय लेकर खुद को पंथक हितैषी होने का दावा करती है। शिरोमणि अकाली दल, जिसे अब अकाली दल बादल के नाम से जाना जाता है, खुद को पंथ का सबसे बड़ा हमदर्द बताता है और उस पर कई पंथ विरोधी काम करने के कई आरोप हैं। इनमें खासकर 1978 में हुई निरंकारी घटना, मोगा कॉन्फ्रैंस के दौरान अकाली दल को पंथक पार्टी की जगह पंजाबी पार्टी घोषित करना, बाबा राम रहीम की बेअदबी के लिए उनके खिलाफ एक्शन न लेना, सरकारी मदद से बाबा राम रहीम की फिल्म चलाना, बाबा राम रहीम को माफ करना, शांति से प्रोटैस्ट करने वाले सिखों पर गोली चलाना और श्री अकाल तख्त साहिब के हुक्मनामे को पूरी तरह लागू न करना तथा सिख मसलों को पूरी तरह हल न करना शामिल है। अकाली दल बादल ने इन सभी आरोपों को खारिज कर दिया है।

चाइनीज मांझा बेचने वालों पर योगी सरकार का बड़ा एक्शन, पूरे नेटवर्क की सघन जांच शुरू

मुख्यमंत्री योगी की दो टूक, चाइनीज मांझे से होने वाली मृत्यु हादसा नहीं, हत्या है
ऑनलाइन सप्लायर से लेकर गोदामों तक जीरो–टॉलरेंस नीति के तहत कार्रवाई तेज
स्कूल–कॉलेजों में जागरूकता अभियान, बच्चों और युवाओं से अपील,चाइनीज मांझे से दूर रहें
दुर्घटना हुई तो स्थानीय पुलिस–प्रशासन भी जिम्मेदार माना जाएगा

लखनऊ ब्यूरो

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के सख्त निर्देशों के बाद प्रदेशभर में चाइनीज मांझे के खिलाफ व्यापक कार्रवाई की तैयारी शुरू हो गई है। मुख्यमंत्री ने साफ कहा है कि चाइनीज मांझे की वजह से होने वाली मृत्यु कोई 'साधारण हादसा' नहीं है, बल्कि 'हत्या' जैसी गंभीर वारदात है। उन्होंने स्पष्ट निर्देश दिया है कि इसके उत्पादन, बिक्री, भंडारण और परिवहन से जुड़े हर व्यक्ति पर कठोर कानूनी कार्रवाई की जाएगी। मुख्यमंत्री के निर्देश पर सभी जिलों में थोक विक्रेताओं, ऑनलाइन सप्लायर्स, परिवहन चौनल और गोदामों की सघन जांच कर पूरे अवैध नेटवर्क को खत्म करने का आदेश दिया गया है। सरकार का लक्ष्य है कि प्रदेश में चाइनीज मांझे की एक भी रील न बिके और न ही कहीं स्टोर हो पाए। इसके लिए जिलों में विशेष अभियान चलाया जाएगा। हर जिले में एक नोडल अधिकारी को 24X7 मॉनिटरिंग की जिम्मेदारी सौंपी जा रही है। ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स, सोशल मीडिया ग्रुप्स और अनौपचारिक चौनलों के जरिए होने वाली अवैध बिक्री पर भी सख्त नजर रखी जाएगी, ताकि किसी भी तरीके से इसकी आपूर्ति को रोका जा सके। सरकार अब इस अभियान को जन–सहयोग से भी जोड़ रही है। स्कूलों और कॉलेजों में व्यापक

जागरूकता कार्यक्रम चलाए जाएंगे, ताकि बच्चों और युवाओं को बताया जा सके कि चाइनीज मांझा प्रतिबंधित होने के साथ–साथ जानलेवा भी है। बाजारों और पतंग विक्रेताओं को आगाह किया जा रहा है कि कहीं भी चाइनीज मांझा मिलता पाया गया तो तत्काल कड़ी कार्रवाई की जाएगी। मुख्यमंत्री ने यह भी कहा है कि किसी क्षेत्र में चाइनीज मांझे से कोई घटना हुई तो केवल विक्रेता ही नहीं, बल्कि स्थानीय पुलिस और प्रशासन भी जिम्मेदार माना जाएगा।

सेवानिवृत्त कर अधीक्षक के एक मकान पर 2 हाउस टैक्स

संवाददाता

लखनऊ। लखनऊ नगर निगम के सेवानिवृत्त कर अधीक्षक के एक मकान पर 2 हाउस टैक्स लग रहा है। इस वजह से उन्हें हाउस टैक्स के 2 बिल मिल रहे हैं। निगम की दुकान का किराया 20 गुना तक बढ़ा दिया गया है। दिवंगत व्यक्ति की बहन ने उनका घर अपने नाम करा लिया है। कॉलोनी में 20 साल से सड़क नहीं बनी है। ये सभी मामले शुक्रवार, 6 फरवरी को नगर निगम के संपूर्ण समाधान दिवस में सामने आए। बड़ी संख्या में लोग समस्याएं लेकर पहुंचे। सरोजनी नगर द्वितीय वार्ड की अवध विहार कॉलोनी के लोगों ने जलभराव को लेकर नगर निगम और पुलिस प्रशासन मुर्दाबाद के नारे लगाए। कई फरियादी सड़क न बनने की भी समस्या लेकर पहुंचे। कुछ लोग दुकान का किराया 20 गुना तक बढ़ने की समस्या बताई। पुरनिया का एक युवक अपनी बुआ के खिलाफ शिकायत लेकर पहुंचा। उसका आरोप है कि बुआ ने जोन–3 के अधिकारियों के साथ मिलीभगत करके मेरे पिता का घर अपने नाम करा लिया है। जांच और कार्रवाई होनी चाहिए। नगर निगम में संपूर्ण समाधान दिवस पर 268 लोग ऐसे पहुंचे जिन्हें रजिस्ट्रेशन कराया और उनके पास अपनी शिकायतों के दस्तावेज थे। कई ऐसे लोग भी पहुंचे जो बिना कागज के थे। जोन–3 के पुरनिया से आकाश अपनी बुआ के खिलाफ शिकायत लेकर पहुंचे। उनका कहना है कि पिताजी की मृत्यु के बाद बुआ ने हमारा घर अपने नाम करा लिया। अब हमें उस पर हक नहीं मिल पा रहा है। बताया हमारा मकान 537/318 (147) नगर निगम में बाबा शंभू यादव और ऋतुराज सिंह यादव के नाम पंजीकृत है। पिता की मृत्यु के बाद नवंबर 2025 में मकान को मां के नाम करवाने के लिए मां के सारे दस्तावेज और अपने पिता का मृत्यु प्रमाणपत्र नगर निगम को उपलब्ध करवाया।

फिल्म विवाद में ब्राह्मणों के साथ खुलकर आईं मायावती

बोली, घूसखोर पंडत पर लगाओ बैन

संवाददाता

लखनऊ। फिल्म घूसखोर पंडत रिलीज से पहले ही विवादों में घिर चुकी है। फिल्म का नाम सामने आने के बाद से ही इसका जमकर विरोध हो रहा है। फिल्म के टाइटल को लेकर ब्राह्मण समाज ने आपत्ति जताई है। लखनऊ में मामला भी दर्ज कर लिया गया है। मामले पर फिल्म डायरेक्टर नीरज पांडेय की सफाई भी सामने आई है। अब यूपी की पूर्व सीएम मायावती ने भी इस फिल्म पर अपनी आपत्ति दर्ज कराई है। इसके साथ ही उन्होंने फिल्म पर बैन लगाने की भी मांग की है। पूर्व सीएम मायावती ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट करते हुए लिखा कि यह बड़े दुख व चिन्ता की बात है कि पिछले कुछ समय से अकेले यूपी में ही नहीं बल्कि अब तो फिल्मों में भी पंडित को घुसपैठिया बताकर पूरे देश में जो उनका अपमान व अनादर किया जा रहा है तथा जिससे समूचे ब्राह्मण समाज में इस समय जबरदस्त रोष व्याप्त है। इसकी हमारी पार्टी कड़े शब्दों में निंदा करती है। जातिसूचक फिल्म पर केन्द्र सरकार को तुरंत प्रतिबंध लगाना चाहिए। सोशल मीडिया समेत जमीन पर भी इस फिल्म का जमकर विरोध देखने को मिल रहा है। भोपाल से लेकर लखनऊ तक लोग अपना विरोध दर्ज करा रहे हैं। दूसरी तरफ फिल्म

डायरेक्टर नीरज पांडेय की सफाई भी सामने आ चुकी है। नीरज ने कहा कि हमारी फिल्म एक काल्पनिक पुलिस ड्रामा है और इसमें पंडत शब्द का इस्तेमाल सिर्फ एक काल्पनिक किरदार के लिए आम बोलचाल के नाम के तौर पर किया गया है। कहानी का फोकस एक व्यक्ति के काम और उसके फैसलों पर है,इसका किसी भी जाति, धर्म या समुदाय से कोई संबंध नहीं है और न ही यह किसी का प्रतिनिधित्व करती है।फिल्म के नाम को लेकर ब्राह्मण समाज विरोध जता रहा है। देश के कई हिस्सों में इसको लेकर विरोध प्रदर्शन किए जा रहे हैं।कई जगहों पर मामला भी दर्ज कराया गया है।शिकायत में मांग की गई है कि फिल्म का टाइटल आपत्तिजनक है और इसकी तुरंत जांच होनी चाहिए। लखनऊ के हजरतगंज थाने में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर फिल्म के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई है।

यमुना एक्सप्रेसवे पर तेजी से आकार ले रहा टॉय पार्क, 154 में 143 प्लॉट आवंटित

ड्रीम डेस्टिनेशन यूपी : सरकार की औद्योगिक नीति से निवेशकों का बढ़ा भरोसा
यीडा के औद्योगिक सेक्टर–33 में विकसित हो रहा टॉय पार्क, निवेश और निर्माण दोनों में आई रफ्तार

संवाददाता

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश सरकार की औद्योगिक विकास नीति का असर अब यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक क्षेत्र में साफ दिखाई देने लगा है। औद्योगिक सेक्टर–33 में विकसित किए जा रहे टॉय पार्क में निवेश और निर्माण दोनों ही स्तर पर तेज प्रगति दर्ज की गई है। प्राधिकरण द्वारा टॉय पार्क के लिए आरक्षित 100 एकड़ भूमि पर 154 औद्योगिक भूखंड नियोजित किए गए हैं, जिनमें से 143 भूखंडों का आवंटन पूरा हो चुका है। आंकड़े प्रदेश में औद्योगिक निवेश को लेकर निवेशकों के बढ़ते भरोसे को दर्शाते हैं।मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में राज्य सरकार का फोकस स्पष्ट है कि औद्योगिक परियोजनाओं को केवल मंजूरी तक सीमित न रखते हुए उनका समय पर क्रियान्वित सुनिश्चित करना। यमुना एक्सप्रेसवे पर विकसित हो रहा टॉय पार्क इसी नीति का उदाहरण बनकर उभर रहा है। पारदर्शी आवंटन, तेज लीज

प्रक्रिया और निर्माण गतिविधियों के चलते उत्तर प्रदेश देश के प्रमुख औद्योगिक केंद्र के रूप में मजबूत उपस्थिति दर्ज करा रहा है।यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण यीडा की ताजा प्रगति रिपोर्ट के अनुसार, टॉय पार्क के अंतर्गत 143 आवंटित भूखंडों में से 124 निवेशकों द्वारा लीज प्लान प्रस्तुत किए जा चुके हैं, जबकि 19 मामलों में लीज प्लान अभी प्राप्त नहीं हुए हैं। इन निवेशकों को एक माह के भीतर आवश्यक दस्तावेज उपलब्ध कराने के लिए कहा गया है। अब तक 120 आवंटियों को चेकलिस्ट जारी की जा चुकी है और 4 मामलों में चेकलिस्ट जारी करने की प्रक्रिया प्रगति पर है।भूमि हस्तांतरण के स्तर पर भी टॉय पार्क परियोजना ने ठोस रफ्तार पकड़ी है। अब तक 108 निवेशकों के पक्ष में लीज डीड का निष्पादन पूरा किया जा चुका है, जबकि 76 निवेशकों को विधिवत पजेशन भी प्रदान कर दिया गया है। परियोजना अब केवल फाइलों में नहीं, बल्कि जमीनी निर्माण की दिशा में आगे बढ़ चुकी है।निर्माण गतिविधियों की बात करें तो 15 निवेशकों के भवन मानचित्र स्वीकृत हो चुके हैं, जबकि 4 औद्योगिक इकाइयों में निर्माण कार्य की शुरुआत भी हो गई है। इसे टॉय पार्क के वास्तविक रूप लेने की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि माना जा रहा है। योगी सरकार का जोर है कि आवंटन के साथ–साथ परियोजनाएं समयबद्ध तरीके से धरातल पर उतरें, जिससे रोजगार सृजन और स्थानीय अर्थव्यवस्था को गति मिल सके। टॉय पार्क के दूसरे चरण के अंतर्गत कुल 11 भूखंडों में से 4 भूखंडों की भूमि उपलब्ध हो चुकी है, जिन्हें नई योजना के तहत प्रकाशित किया गया है। शेष 7 भूखंड, जिनका कुल क्षेत्रफल 6.71 एकड़ है, अभी आवंटन से शेष हैं। इन भूखंडों के लिए भूमि अधिग्रहण की कार्रवाई तेजी से आगे बढ़ाई जा रही है, ताकि जल्द से जल्द इन्हें भी निवेशकों के लिए उपलब्ध कराया जा सके।टॉय पार्क के अंतर्गत खिलौना उद्योग से जुड़ी विनिर्माण इकाइयों की स्थापना का प्रस्ताव है, जिसमें प्लास्टिक, लकड़ी, फैब्रिक, धातु, इलेक्ट्रॉनिक खिलौनों के निर्माण से संबंधित गतिविधियां शामिल होंगी। योजना में कॉमन फैसिलिटी सेंटर, डिजाइन, पैकेजिंग, टेस्टिंग, वेयरहाउसिंग और लॉजिस्टिक्स से जुड़ा आधारभूत ढांचा विकसित किया जाना प्रस्तावित है।

स्वामी सत्यमित्रानंद गिरी जी महाराज की श्री विग्रह मूर्ति स्थापना समारोह में शामिल हुए सीएम योगी, कहा- संत समाज है भारत की आत्मा

संवाददाता

लखनऊ। स्वामी सत्यमित्रानंद गिरी जी महाराज की श्री विग्रह मूर्ति के स्थापना समारोह में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रदेश

की पूर्ववर्ती सरकारों पर तीखा प्रहार करते हुए कहा कि एक समय उत्तर प्रदेश में भारत की विरासत को कोसा जाता था और रामभक्तों पर गोलियां चलाई जाती थीं। उन्होंने कहा कि उस दौर में अपमान रामभक्तों का नहीं, बल्कि भारत की सनातन विरासत और उसके आध्यात्मिक मूल्यों का होता था।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि विरासत और आस्था के प्रति उपेक्षा का ही परिणाम था कि उत्तर प्रदेश लूट और अराजकता का अड्डा बन गया था। उन्होंने कहा कि उस समय न बेटियां सुरक्षित थीं और न ही व्यापारी वर्ग सुरक्षित महसूस करता था। कानून–व्यवस्था की स्थिति चरमराई हुई थी, जिससे आम नागरिक भय के माहौल में जीने को मजबूर था। मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्तमान में प्रदेश की तस्वीर पूरी तरह बदल चुकी है। अब सनातन विरासत का सम्मान हो रहा है, आध्यात्मिक मूल्यों को संरक्षण मिल रहा है और सख्त कानून–व्यवस्था के चलते अपराध पर प्रभावी नियंत्रण स्थापित हुआ है। उन्होंने कहा कि आज उत्तर प्रदेश में बेटियां भी सुरक्षित हैं और व्यापारी भी निर्भय होकर अपने व्यापारिक कार्य कर रहे हैं। योगी आदित्यनाथ ने स्वामी सत्यमित्रानंद गिरी जी महाराज के योगदान का स्मरण करते हुए कहा कि संत समाज भारत की आत्मा है और आध्यात्मिक परंपराएं राष्ट्र को दिशा देती हैं। उन्होंने कहा कि ऐसे संतों के विचार और संदेश समाज में नैतिकता, अनुशासन और राष्ट्रभक्ति का भाव जागृत करते हैं।

मेयर की गाड़ी के सामने लेटे प्रदर्शनकारी, बोले, बाबा साहब की होर्डिंग तोड़ी गई

लखनऊ। राजधानी लखनऊ में आजाद समाज पार्टी के कार्यकर्ताओं ने नगर निगम मुख्यालय पर प्रदर्शन किया। मौके पर मेयर सुषमा खर्कवाल नगर निगम से अपनी गाड़ी से निकल रही थीं। तभी कार्यकर्ताओं ने उन्हें घेर लिया। उनकी गाड़ी के सामने लेट गए और निगम मुख्यालय से निकलने नहीं दिया। इस दौरान मेयर नगर निगम से निकल नहीं पाईं। आजाद समाज पार्टी के कार्यकर्ताओं का कहना है कि सीतापुर रोड स्थित डॉ. आंबेडकर की होर्डिंग तोड़ी गई। इससे नाराजगी है। मौके पर पार्टी के कार्यकर्ता मेयर सुषमा खर्कवाल के खिलाफ जमकर नारेबाजी की।

योगी मंत्रिमंडल विस्तार से पहले हो सकता यूपी भाजपा में बड़ा बदलाव

पंकज चौधरी की टीम में शामिल होंगे कुछ नए तो कुछ हो सकते शिफ्ट

संवाददाता

लखनऊ। भारतीय जनता पार्टी उत्तर प्रदेश में 2027 के विधानसभा चुनाव से पहले अपने मोर्चों को अभेद्य बनाने की रणनीति पर काम कर रही है। योगी मंत्रिमंडल विस्तार से पहले पार्टी के संगठन में व्यापक बदलाव की सुगबुगाहट तेज हो गई है।माना जा रहा है कि अगले एक माह के भीतर जिला कमेटियों के गठन से लेकर क्षेत्रीय अध्यक्षों के नामों और प्रदेश की नई टीम की घोषणा कर दी जाएगी। विभिन्न आयोगों, निगमों और बोर्डों के खाली पड़े पदों पर भी नियुक्तियों की प्रक्रिया तेज हो गई है।विधानसभा चुनाव की तैयारियों में जुटने से पहले भगवा खेमा सांगठनिक ढांचे को पूरी तरह दुरुस्त करना चाहता है। प्रदेश में भाजपा के कुल 98 संगठनात्मक जिले हैं, जिनमें से अभी 84 जिलों में ही अध्यक्षों की घोषणा हुई है। शेष 14 जिलों में जल्द ही नए चेहरों की ताजपोशी होगी।पहले संगठन विस्तार का काम शुरू किया गया था, लेकिन मतदाता सूची के पुनरीक्षण कार्य के चलते इसे रोक दिया गया था। अब

एसआईआर का काम पूरा होते ही नई नियुक्तियों का रास्ता साफ हो गया है। ज्यादा चर्चा प्रदेश अध्यक्ष पंकज चौधरी की नई टीम को लेकर है। पूर्व अध्यक्षों के कार्यकाल में टीम में व्यापक बदलाव नहीं हुए थे, केवल चेहरों को एक पद से दूसरे पद पर स्थानांतरित किया गया था। लेकिन इस बार चर्चा है कि प्रदेश टीम में कई नए और युवा चेहरों को जगह मिलेगी। संगठन के साथ सरकार में भी बदलाव की तैयारी है। योगी कैबिनेट में फेरबदल का काम मार्च में किया जा सकता है। कैबिनेट विस्तार के जरिए क्षेत्रीय और जातीय समीकरणों को साधने की कोशिश होगी। इस संभावित फेरबदल को लेकर लखनऊ के गलियारों में दावेदारों की सक्रियता बढ़ गई है। जहां नए नेता मंत्री पद के लिए लॉबिंग कर रहे हैं, वहीं मौजूदा मंत्रियों ने अपनी कुर्सी बचाने के लिए कवायद तेज कर दी है।इन बदलावों को लेकर प्रदेश भाजपा अध्यक्ष पंकज चौधरी और महामंत्री संगठन धर्मपाल सिंह के बीच लखनऊ में लंबी मंत्रणा हो चुकी है। हाल ही में दोनों नेताओं ने दिल्ली में केंद्रीय नेतृत्व के साथ भी अहम बैठक की है। पार्टी का शीर्ष नेतृत्व चाहता है कि 2027 की लड़ाई के लिए टीम ऐसी हो जो न केवल अनुभवी हो, बल्कि जिसमें भविष्य की चुनौतियों से निपटने का उत्साह भी हो। इसके साथ ही, लंबे समय से खाली पड़े आयोगों और बोर्डों के पदों पर भी कार्यकर्ताओं को समायोजित करने की तैयारी है ताकि जमीनी स्तर पर कार्यकर्ताओं का उत्साह बना रहे।

आवारा कुत्तों से निजात दिलाएंगे शेल्टर होम व एबीसी सेंटर, डॉग बाइट की घटनाओं पर योगी सरकार गंभीर

शेल्टर होम्स के लिए अलग डीपीआर तैयार, प्रति यूनिट 470 से 531 लाख रुपये तक लागत आने का अनुमान

संवाददाता

लखनऊ। आवारा कुत्तों की समस्या और डॉग बाइट की बढ़ती घटनाओं को योगी सरकार ने गंभीरता से लिया है। जन सुरक्षा से जुड़े इस मुद्दे पर सख्त व ठोस कदम उठाते हुए प्रदेश सरकार ने नगर निगमों एवं जनपद मुख्यालयों पर डॉग शेल्टर होम व एनिमल बर्थ कंट्रोल एबीसी सेंटर की स्थापना प्रक्रिया तेज कर दी है। शासन स्तर पर इसे प्राथमिकता देते हुए भूमि चिह्नीकरण, बजट निर्धारण और परियोजना स्वीकृति की कार्यवाही एक साथ आगे बढ़ाई जा रही है। सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले में गाइडलाइंस जारी की थीं।मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में राज्य सरकार का स्पष्ट उद्देश्य है कि आवारा कुत्तों की समस्या का समाधान मानवीय, वैज्ञानिक व स्थायी तरीके से किया जाए। सरकार का मानना है कि डॉग शेल्टर होम और एबीसी सेंटर की प्रभावी व्यवस्था से जहां एक ओर आमजन की सुरक्षा होगी, दूसरी ओर पशु कल्याण को

भी मजबूती मिलेगी। नगर निगम क्षेत्रों में पहले से संचालित अथवा प्रस्तावित एबीसी सेंटरों के साथ ही डॉग शेल्टर होम विकसित किए जाएंगे। प्रत्येक नगर निगम को निर्देशित किया गया है कि वह उपयुक्त भूमि उपलब्ध कराए और आवश्यक प्रशासनिक औपचारिकताओं को शीघ्र पूर्ण करे। शासन द्वारा स्पष्ट किया गया है कि यह पूरी प्रक्रिया सुप्रीम कोर्ट की गाइडलाइंस व पशु कल्याण से जुड़े मानकों के अनुरूप की जा रही है।योगी सरकार ने डॉग शेल्टर होम के लिए अलग से विस्तृत परियोजना रिपोर्ट डीपीआर तैयार करने के निर्देश दिए हैं। प्राप्त प्रस्तावों के अनुसार प्रति शेल्टर होम 470 लाख रुपये से लेकर 531 लाख रुपये तक लागत आने का अनुमान है। डीपीआर में शेल्टर होम की क्षमता, इन्फ्रास्ट्रक्चर, पशु चिकित्सा सुविधाएं, भोजन, स्वच्छता, सुरक्षा व्यवस्था और प्रशिक्षित स्टाफ की तैनाती जैसे सभी महत्वपूर्ण बिंदुओं को शामिल किया गया है। शासन स्तर पर इन डीपीआर को सैद्धांतिक मंजूरी प्रदान कर दी गई है और अब सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों के अनुरूप अगले चरण की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। प्रयागराज नगर निगम क्षेत्र में ग्राम मऊर उपरहट, तहसील सोरांव में डॉग शेल्टर होम के लिए भूमि चिह्नित कर ली गई है। लखनऊ नगर निगम में भूमि की उपलब्धता को लेकर कार्यकारिणी बोर्ड से प्रस्ताव स्वीकृत हो चुका है। अन्य नगर निगमों से भी सूचना प्राप्त की जा रही है ताकि पूरे प्रदेश में एक समान व्यवस्था लागू की जा सके।जनपद मुख्यालयों पर एबीसी सेंटर एवं शेल्टर होम की स्थापना को लेकर तेजी से कार्यवाही की जा रही है। ललितपुर में 12.182 हेक्टेयर, हरदोई में 0.2 हेक्टेयर, बुलंदशहर में 2000 वर्ग मीटर तथा फतेहपुर में 0.769 हेक्टेयर भूमि एबीसी सेंटर एवं डॉग शेल्टर होम के लिए चिह्नित कर ली गई है। शेष जनपदों से सूचनाएं प्राप्त होते ही वहां भी भूमि चिह्नीकरण और परियोजना स्वीकृति की प्रक्रिया पूर्ण की जाएगी।

परीक्षा पे चर्चा, सीएम योगी बोले, पीएम मोदी के शब्दों में हर चुनौती का सामना करने की प्रेरणा

संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के परीक्षा पे चर्चा कार्यक्रम की प्रशंसा की है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के शब्दों में सकारात्मक दृष्टि, लक्ष्य की स्पष्टता और हर

चुनौती का मुस्कुराकर सामना करने की प्रेरणा समाहित है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, परीक्षा आत्मविश्वास, अनुशासन और धैर्य की कसौटी होती है। ऐसे क्षणों में सही मार्गदर्शन विद्यार्थियों के मन से भय हटाकर उनमें विश्वास और ऊर्जा भर देता है। इसी भावना के साथ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने परीक्षा पे चर्चा के माध्यम से छात्रों से आत्मीय संवाद किया। सीएम योगी ने आगे लिखा, प्रधानमंत्री ने छात्रों को यह संदेश दिया कि तनाव नहीं, संतुलन को अपनाइए। प्रतिस्पर्धा नहीं, आत्म–विकास पर ध्यान दीजिए और परिणाम नहीं, निरंतर प्रयास पर भरोसा रखिए। उनके शब्दों में सकारात्मक दृष्टि, लक्ष्य की स्पष्टता और हर चुनौती का मुस्कुराकर सामना करने की प्रेरणा समाहित है। उन्होंने एक्स पोस्ट में लिखा, यह संवाद केवल परीक्षा कक्ष तक सीमित नहीं, बल्कि जीवन की हर परीक्षा में स्थिर रहने, आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने और अपने सामर्थ्य पर विश्वास बनाए रखने का संदेश देता है। निश्चय ही यह पहल करोड़ों विद्यार्थियों के मन में नई दिशा, नई ऊर्जा और नए विश्वास का संचार करेगी। मुख्यमंत्री योगी ने प्रधानमंत्री मोदी आभार व्यक्त किया और सभी विद्यार्थियों को उज्ज्वल भविष्य, आत्मविश्वासपूर्ण प्रयास और सफलता से भरे पथ की शुभकामनाएं दीं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के परीक्षा पे चर्चा कार्यक्रम का पहला एपिसोड शुक्रवार को जारी हुआ। इस एपिसोड में प्रधानमंत्री मोदी ने आपका स्टाइल–आपकी गति से लेकर लक्ष्य के साथ तैयारी, कम प्रेशर–ज्यादा सीखना, शोर के बीच टिके रहना और बड़े सपने–बड़े काम तक अलग–अलग विषयों पर छात्रों से संवाद किया। इसी बीच, उन्होंने छात्रों के कई सवालों के भी जवाब दिए।

जिन हाथों ने कभी बंदूक थामकर हिंसा को अंजाम दिया, वही प्रशिक्षण लेकर सीख रहे हुनर

नक्सल पुनर्वास नीति के तहत आत्मसमर्पित 40 माओवादियों को आजीविका मूलक गतिविधियों से जोड़ा जा रहा

मुख्यधारा में लौटने के बाद चौगेल कैंप में दिया जा रहा विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रशिक्षण

बीएनई

रायपुर। अगर कुछ कर गुजरने का जज्बा मन में हो तो जीवन में हर काम आसान हो जाता है। इस कथन को आत्मसमर्पित माओवादियों ने चरितार्थ किया है। जिन हाथों ने कभी बंदूक थामकर हिंसा की राह अख्तियार किया था, आज उन्हीं हाथों को राज्य की नक्सल पुनर्वास नीति के तहत कुशल और दक्ष बनाने की कवायद जिला प्रशासन द्वारा की जा रही है। शासन की मंशानुसार ग्राम गतिविधियों में कुशल होकर बेहतर ढंग से सम्मान पूर्वक जीवन निर्वाह कर सके।

चौगेल कैंप परिसर बना कौशलगढ़

वर्षों से लाल आतंक के साए में हिंसा का दंश झेल रहा बस्तर संभाग अब विकास की ओर शनैः–शनैः आगे बढ़ रहा है और माओवाद का दायरा धीरे–धीरे सिमटता जा रहा है। छत्तीसगढ़ सहित देश को माओवाद से मुक्ति दिलाने केंद्र सरकार के संकल्प को पूरा करने प्रदेश सरकार हरसंभव प्रशिक्षित किया जा रहा है, साथ ही उन्हें शिक्षित भी किया जा रहा है। आवश्यकतानुसार कक्षा पहली से आठवीं तक के पाठ्यक्रमों का नियमित अध्ययन कराया जा रहा है, जिसमें रूचि लेते हुए सभी आत्मसमर्पित माओवादी अपने भविष्य को पूरी शिद्दत से गढ़ने में संलग्न हैं। 20–20 का बैच बनाकर उन्हें हुनरमंद बनाने के सतत प्रयास किए जा रहे हैं।

ड्राइविंग सीखने का शौक अब पूरा हो रहा– मनहेर तारम

चौगेल (मुल्ला) कैंप में प्रशिक्षण देकर 'हिंसा से हुनर' की ओर लौटे माओवादियों को नया जीवनदान मिल रहा है।

आजीविका मूलक गतिविधियों का दिया जा रहा है प्रशिक्षण

कभी माओवाद गतिविधियों में संलिप्त रहे युवक–युवतियों को अब ड्राइविंग, सिलाई, काष्ठशिल्प कला, सहायक इलेक्ट्रिशियन जैसे विभिन्न ट्रेड में सतत् प्रशिक्षण दिया जा रहा है, जिससे वे समाज की मुख्य धारा में लौटने के बाद आजीविका मूलक प्रयास कर रही है। वहीं हथियार उठाने वालों को भविष्य गढ़ने का सुनहरा अवसर भी सरकार द्वारा दिया जा रहा है। आत्मसमर्पित/पीड़ित नक्सल पुनर्वास नीति–2025 के अंतर्गत उन्हें विभिन्न सृजनात्मक और रोजगारमूलक गतिविधियों के तहत प्रशिक्षण दिया जा रहा है। भानुप्रतापपुर विकासखंड से लगे ग्राम चौगेल (मुल्ला) का बीएसएफ कैम्प परिसर 'कौशलगढ़' बन गया है, जहां समाज की मुख्यधारा में लौटे 40 आत्मसमर्पित माओवादियों को अलग–अलग पाठ्यक्रमों में चारपहिया वाहन चालन का प्रशिक्षण ले रहे आत्मसमर्पित माओवादी 40 वर्षीय श्री मनहेर तारम ने बताया कि पिछले दो सप्ताह से उन्हें ड्रायविंग की ट्रेनिंग दी जा रही है, जिसे वे पूरी रूचि के साथ सीख रहे हैं। ट्रेनर द्वारा स्टेयरिंग थामने से लेकर क्लच, ब्रेक व एक्सिलरेटर का प्रयोग करना सिखाया जा रहा है। उन्होंने बताया कि ड्रायविंग सीखने की चाहत अब पूरी हो रही है। इसके अलावा सिलाई और काष्ठशिल्प का प्रशिक्षण कैम्प में दिया जा रहा है। इसी तरह नरसिंह नेताम ने बताया कि वह भी फोरव्हीलर की ड्रायविंग में अपना हाथ आजमा रहे हैं तथा यहां आकर ऐसी गतिविधियों से जुड़ रहे हैं, जिससे आगे का जीवन बेहतर हो सके। 19 साल के सुकदू पद्दा ने बताया कि यहां पिछले तीन महीने से ट्रेनिंग ले रहे हैं और खुद को आजीविका मूलक कार्यों से जोड़ रहे हैं, जबकि वह निरक्षर है। वहीं 19 वर्ष की कु. काजल वेड़दा ने प्रशिक्षण कार्यक्रम का अनुभव साझा करते हुए कहा कि यहां आकर अलग–अलग पाठ्यक्रमों में नियमित रूप से प्रशिक्षण दिया जा रहा है। उन्हें बचपन से कपड़ों की सिलाई करने की इच्छा थी, यहां आकर वह भी पूरी हो रही है। वहीं शिक्षकां के द्वारा प्राथमिक शिक्षा का भी वह लाभ ले रही हैं। इसी तरह कैंप में रह रहे जगदेव कोमरा, राजू नुरूटी, बीरसिंह मण्डावी, मैनू नेगी, सनऊ गावड़े, मानकी नेताम, सामको नुरूटी, उंगी कोर्राम, रमोती कवाची, मानकेर हुपेंडी, डाली सलाम, गेंजो हुपेंडी सहित सभी आत्मसमर्पित माओवादी अपनी रूचि अनुसार ड्राईविंग, काष्ठशिल्प कला, सिलाई मशीन तथा सहायक इलेक्ट्रिशियन ट्रेड में बेहतर ढंग से प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। उन्होंने यह भी बताया कि स्वास्थ्य विभाग की टीम द्वारा उनका नियमितरूप से स्वास्थ्य परीक्षण कर आवश्यकतानुसार दवाईयां दी जाती हैं। कैम्प में मनोरंजनात्मक गतिविधियां कैरम, वाद्य यंत्र, विभिन्न प्रकार के खेल भी आयोजित किया जाता है। पुनर्वास कैंप के नोडल अधिकारी विनोद अहिरवार ने बताया कि कलेक्टर उत्तर बस्तर कांकेर के निर्देशानुसार आत्मसमर्पित 40 माओवादियों को समाज की मुख्यधारा से जोड़ते हुए विभिन्न पाठ्यक्रमों में 20–20 के बैच में चौगेल (मुल्ला) कैंप में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं और सभी को बेहतर ढंग से प्रशिक्षित किया जा रहा है। भविष्य में मशरूम उत्पादन, बागवानी सहित विभिन्न सृजनात्मक एवं स्वरोजगार मूलक पाठ्यक्रमों में जल्द ही प्रशिक्षण दिया जाएगा। इस तरह आत्मसमर्पण कर मुख्यधारा में लौटे माओवादियों को राज्य शासन द्वारा अवसर देकर उन्हें आत्मनिर्भर तथा स्वरोजगारमूलक सकारात्मक कार्यों से जोड़ा जा रहा है, जिससे उन्हें सम्मानपूर्वक जीवन व्यतीत करने का मौका मिल सके।

एनटीपीसी सिंगरौली में चार दिवसीय सम्भागीय नाट्य समारोह का गरिमामय समापन

"अंतिम दिवस अलखनन्दन रचित नाटक 'चंदा बेड़नी' का प्रभावशाली मंचन"

बीएनई

सिंगरौली। उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी, लखनऊ (संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश) एवं एनटीपीसी सिंगरौली, सोनभद्र के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित चार दिवसीय सम्भागीय नाट्य समारोह 2025–26 का आयोजन 02 फरवरी से 05 फरवरी 2026 तक सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस रंगमंचीय महोत्सव ने सिंगरौली को सांस्कृतिक चेतना एवं रचनात्मक संवाद का सशक्त केंद्र बना दिया। समारोह के अंतिम दिन, 05 फरवरी 2026 को वरिष्ठ नाटककार अलखनन्दन द्वारा रचित चर्चित नाटक 'चंदा बेड़नी' का प्रभावशाली मंचन किया गया। इस नाटक का संवेदनशील रूपांतरण विजय बहादुर श्रीवास्तव द्वारा किया गया, जबकि निर्देशन नीरज कुशवाहा के कुशल मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ। नाटक का मंचन रसरंग फाउंडेशन, कानपुर द्वारा किया गया। कर्मचारी विकास केंद्र, एनटीपीसी सिंगरौली में प्रस्तुत इस नाट्य कृति ने दर्शकों को भावनात्मक रूप से गहराई तक प्रभावित किया। सशक्त अभिनय, सटीक मंच–सज्जा एवं प्रभावी निर्देशन के माध्यम से सामाजिक यथार्थ को अत्यंत मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया गया, जिसे दर्शकों ने करतल ध्वनि के साथ सराहा। इस अवसर पर प्रज्ञा नायक, अध्यक्षा, वनिता समाज, सी. एच. किशोर कुमार, महाप्रबंधक (प्रचालन एवं अनुरक्षण), रश्मी रंजन मोहंती, महाप्रबंधक (प्रोजेक्ट), विभिन्न विभागों के प्रमुख, वनिता समाज की वरिष्ठ सदस्याएं, यूनियन एवं एसोसिएशन के प्रतिनिधिगण, ग्राम प्रधान, प्राचार्यगण, पत्रकार बंधु तथा बड़ी संख्या में दर्शक उपस्थित रहे। समापन अवसर पर अपने संबोधन में सी. एच. किशोर कुमार, महाप्रबंधक (प्रचालन एवं अनुरक्षण) ने कहा कि यह चार दिवसीय नाट्य समारोह कला, संस्कृति और संवेदना का एक अनुपम संगम रहा। उन्होंने कहा कि प्रस्तुत नाट्य कृतियों ने न केवल मनोरंजन किया, बल्कि समाज, जीवन और मानवीय मूल्यों पर गंभीर चिंतन का अवसर भी प्रदान किया। उन्होंने कलाकारों की साधना, समर्पण एवं अनुशासन की सराहना करते हुए रसरंग फाउंडेशन, कानपुर की भूमिका को विशेष रूप से प्रशंसनीय बताया। उन्होंने अपने संबोधन में यह भी कहा कि 'चंदा बेड़नी' जैसे नाटक हमें यह संदेश देते हैं कि प्रेम, विश्वास, करुणा और संवेदनशीलता ही जीवन की वास्तविक पूँजी हैं। कला का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि मानव चेतना को जागृत करना भी है, और यह आयोजन इस उद्देश्य पर पूर्णतः खरा उतरा है। चार दिवसीय इस सम्भागीय नाट्य समारोह का मुख्य उद्देश्य रंगमंच के माध्यम से सांस्कृतिक मूल्यों का संवर्धन, रचनात्मक अभिव्यक्ति को प्रोत्साहन तथा क्षेत्रीय कलाकारों को मंच प्रदान करना रहा। यह आयोजन रंगमंच प्रेमियों के लिए एक अविस्मरणीय अनुभव सिद्ध हुआ। समारोह के सफल आयोजन पर एनटीपीसी सिंगरौली ने उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी, लखनऊ, सभी कलाकारों, दर्शकों, सहयोगी संस्थाओं एवं मीडिया प्रतिनिधियों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया तथा भविष्य में भी ऐसे सांस्कृतिक आयोजनों को निरंतर आगे बढ़ाने की प्रतिबद्धता व्यक्त की।

संकट मोचन मन्दिर का निर्माण व मूर्ति प्रतिष्ठा कार्यक्रम सम्पन्न

बीएनई

सोनभद्र/(रॉबर्ट्सगंज)। ग्राम सभा पारसी पांडेय के खैरही मौज में संकट मोचन मंदिर का निर्माण व

मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा की गई, इस अवसर पर एनएसयूआई के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष राष्ट्रीय सचिव राघवेंद्र नारायण ने संकट मोचन प्रभु हनुमान जी की पूजा अर्चना कर सभी क्षेत्र व देश वासियों के कल्याण की कामना की। इस अवसर पर कांग्रेस के ब्लॉक अध्यक्ष अमरेश देव पांडेय जी, आरटीआई के अध्यक्ष श्रीकांत मिश्रा,चंद्र किशोर देव पांडेय जी(प्रधान), लरेंस एथोनी जी, हेमनाथ दुबे जी, मुनव्वर अली जी, बल्लू कोल जी, प्रदीप कोलजी, रियाजुल हुसैन जी, उमेश बियार जी, लाल जी बियार, सुरेश कुमार सिंह, दद्दू बियार, अर्जुन बियार, चंपा देवी, दुलारी देवी, व अन्य भारी संख्या में ग्रामीण उपस्थित थे। इस अवसर पर राघवेंद्र नारायण ने कहा की आज जहां समाज में तमाम लोग और ताकते धार्मिक और जातीय आधार पर उन्माद और विद्वेष फैलाने का काम कर रही हैं, वहीं पर इस संकट मोचन मंदिर की स्थापना में मुनव्वर अली जी और बल्लू कोल जी का योगदान न सिर्फ बेहद सराहनीय है, बल्कि अनुकरणीय भी है, लोगों को इनसे प्रेरणा,सीख और सबक लेकर के सामाजिक समरसता व आपसी भाईचारे के लिए काम करना चाहिए जिससे राष्ट्र व क्षेत्र का विकास हो सके और देश में गंगा जमुनी तहजीब बदस्तूर कायम रहे।

FIH प्रो लीग के लिए भारतीय पुरुष हॉकी टीम घोषित, धाविका पूजा डोप टेस्ट नहीं देने के कारण निलंबित

एजेंसी

नई दिल्ली। हॉकी इंडिया ने राउरकेला के बिरसा मुंडा अंतरराष्ट्रीय हॉकी स्टेडियम में दस से 15 फरवरी तक होने वाले एफआईएच प्रो लीग के पहले चरण के लिये 24 सदस्यीय भारतीय पुरूष टीम की घोषणा की। हॉकी इंडिया ने पिछले महीने 33 संभावित खिलाड़ियों की सूची जारी की थी जिसे अब घटाकर 24 कर दिया गया है।

इस चरण में भारत के अलावा बेल्जियम और अर्जेंटीना की टीमें भाग लेंगी। भारत के मुख्य कोच क्रेग फुल्टोन ने एक विज्ञप्ति में कहा, श्टीम में युवा और अनुभवी खिलाड़ियों का अच्छा मिश्रण है। हमारे पास रोशन कुजूर और मनमीत सिंह जैसे युवा हैं जबकि सीनियर खिलाड़ी भी टीम में हैं। यह संतुलन काफी जरूरी है। अर्जेंटीना और बेल्जियम बेहतरीन टीमें हैं और हम अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने उतरेंगे। 24 फरवरी को स्पेन से और 22 तथा 25 फरवरी को आस्ट्रेलिया से खेलना है । लीग का यूरोपीय चरण जून में खेला जायेगा।

2026 की पहली एमपीसी में नहीं बदला रेपो रेट

आरबीआई गवर्नर बोले-भारतीय अर्थव्यवस्था का प्रदर्शन बेहतर

दिल्ली ब्यूरो

नई दिल्ली। वर्ष 2026 के पहले मौद्रिक नीति समिति के फैसलों का एलान शुक्रवार को भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर संजय मल्होत्रा ने किया। केंद्रीय बजट 2026 और हाल ही में हुए भारत–अमेरिका व्यापार समझौते के बाद यह पहली नीतिगत समीक्षा है, जिस पर दलाल स्ट्रीट और आर्थिक जगत की निगाहें टिकी थी। आरबीआई ने इस बार ब्याज दरों में कोई बदलाव नहीं किया है और इसे श्यथास्थितिश बनाए रखा है। रिजर्व बैंक की मौद्रिक नीति समिति ने उम्मीदों के अनुरूप रेपो रेट को 5.25% पर यथावत रखने का फैसला किया है। गवर्नर संजय मल्होत्रा ने घोषणा की है कि एमपीसी ने नीतिगत रुख को श्तटस्थश बनाए रखने का निर्णय लिया है। ब्याज दरें स्थिर, तटस्थ रुख बरकरार आरबीआई गवर्नर ने जोर देकर कहा कि भारतीय अर्थव्यवस्था मजबूत बनी हुई है और घरेलू मुद्रास्फीति व विकास का परिदृश्य सकारात्मक है। गवर्नर ने यह भी साफ किया कि भविष्य में मौद्रिक नीति संशोधित शृंखला पर आधारित नए मुद्रास्फीति आंकड़ों से निर्देशित होगी। इससे पहले साल 2025 में रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया ने उदार रुख अपनाते हुए रेपो रेट में कुल 125 बेसिस पॉइंट्स की बड़ी कटौती की थी। दिसंबर 2025 में हुई साल की अंतिम मौद्रिक नीति समिति की बैठक में रेपो रेट को 25 बेसिस पॉइंट और घटा दिया गया, जिससे यह 5.5% से घटकर 5.25% पर आ गया था। जानिए पिछले साल और कब–कब हुई कटौती? फरवरी : साल की शुरुआत में सतर्क रुख अपनाते हुए 25 बेसिस पॉइंट की पहली कटौती की गई। अप्रैलरू आर्थिक गति को बनाए रखने के लिए दूसरी बार फिर से 25 बेसिस पॉइंट की कमी की गई। जूनरू यह साल की सबसे बड़ी कटौती थी, जहां रिजर्व बैंक ने रेपो रेट को सीधा 50 बेसिस पॉइंट घटा दिया। दिसंबररू साल के अंत में अंतिम नीति समीक्षा के दौरान 25 बेसिस पॉइंट की आखिरी कटौती कर रेपो रेट को 5.25% के स्तर पर लाया गया। 2026 की पहली एमपीसी के बाद मांग व खपत पर गवर्नर क्या बोले? अर्थव्यवस्था के चालकों पर प्रकाश डालते हुए गवर्नर ने कहा कि कॉरपोरेट प्रदर्शन में सुधार और अनौपचारिक क्षेत्र में निरंतर गति से विनिर्माण को बढ़ावा मिलेगा। मांग के मोर्चे पर, ग्रामीण मांग स्थिर बनी हुई है, जबकि शहरी खपत में और वृद्धि होने की उम्मीद है। इसके अलावा, गवर्नर मल्होत्रा ने बताया कि हाल ही में संपन्न भारत–यूरोपीय संघ मुक्त व्यापार समझौता और संभावित भारत–अमेरिका व्यापार सौदा निर्यात की गति को मजबूत समर्थन प्रदान करेंगे। आर्थिक अनुमानों पर क्या बोले गवर्नर? आरबीआई गवर्नर ने भविष्य के आर्थिक परिदृश्य पर भरोसा जताते हुए अगले वित्त वर्ष की पहली और दूसरी तिमाही के लिए विकास दर के अनुमान को संशोधित कर बढ़ा दिया है, जिसके क्रमशः 6.9% और 7% रहने की उम्मीद है। महंगाई के मोर्चे पर, चालू वित्त वर्ष के लिए मुद्रास्फीति 2.1% रहने का अनुमान है, जबकि वित्त वर्ष 2027 की पहली तिमाही में इसके 4% और दूसरी तिमाही में 4.2% रहने की संभावना जताई गई है।

संक्षिप्त

अमेरिका में 800 डॉलर तक बिना शुल्क सुविधा खत्म, टैरिफ एक्ट से छोटे निर्यातक मुश्किल में कैसे ?

दिल्ली ब्यूरो

नई दिल्ली। अमेरिका में 800 डॉलर तक बिना शुल्क माल भेजने की सुविधा खत्म होने से छोटे निर्यातक मुश्किल में है। अब शुल्क लगने के साथ ही छोटे–छोटे पार्सल को कस्टम प्रक्रिया के तहत बाहर आने में काफी वक्त लगने लगा है। कारोबारी और निर्यातक चाहते हैं कि भारत सरकार इस मुद्दे पर भी अमेरिका से बात करे। असल में पहले 800 डॉलर मूल्य तक की अमेरिका भेजी जाने वाली खेपों पर कोई शुल्क नहीं लगता था। लेकिन जब पिछले साल टैरिफ वार शुरू हुआ तो चरणबद्ध तरीके से भारतीय सामान पर 50 फीसदी तक टैरिफ लगा दिया। इसके साथ ही, गत वर्ष संयुक्त राज्य अमेरिका के टैरिफ एक्ट, 1930 की धारा 321 के तहत अमेरिका ने यह सुविधा खत्म कर दी है। इस सुविधा से छोटे निर्यातकों, कारीगरों और सीमा पार ई–कॉमर्स से जुड़े उद्यमों को काफी मदद मिलती थी। इस छूट के समाप्त होने से कई चुनौतियां बढ़ी हैं। अमेरिकी बाजार और छोटे उद्यम हस्तशिल्प और श्रम आधारित उत्पाद बनाने वाले छोटे उद्यम अब अधिक लागत के कारण अमेरिकी बाजार में प्रतिस्पर्धा नहीं कर पा रहे हैं। पहले मिलने वाली यह सीमा ऑनलाइन अंतरराष्ट्रीय व्यापार को भी सुगम बनाती थी। अमेरिकी ग्राहकों तक सीधे भारतीय उत्पाद पहुंचाना था और अतिरिक्त शुल्क या जटिल दस्तावेजी प्रक्रिया की जरूरत नहीं होती थी। इससे कई भारतीय डायरेक्ट–टू–कंज्यूमर ब्रांडों को वैश्विक पहचान मिली। शुल्क बढ़ने से ऑर्डरों में आई कमी का सीधा असर रोजगार और आय पर पड़ रहा है। अब निर्यातक चाहते हैं कि भारत सरकार अमेरिका से बातचीत कर 800 डॉलर मूल्य तक की बिना शुल्क भेजी जाने वाली खेपों पर मिलने वाली छूट बहाल कराए। कस्टम में माल बाहर आने में लग रहा ज्यादा समय राजगढ़िया एक्सपोर्ट के संस्थापक सुदीप का कहना है।

लखनऊ में मेकर्स पर दर्ज हुआ मामला, एफएमसी ने भी निर्माताओं को भेजा नोटिस

एजेंसी

मनोज बाजपेयी की नेटफ्लिक्स पर आने वाली आगामी फिल्म 'घूसखोर पंडित' को लेकर विवाद लगातार बढ़ता जा रहा है। मुंबई और भोपाल के बाद अब उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में भी फिल्म के मेकर्स के खिलाफ मामला दर्ज कराया गया है। वहीं मुंबई स्थित संगठन फिल्म मेकर्स कंबाइन (एफएमसी) ने भी फिल्म के शीर्षक पर आपत्ति जताते हुए मेकर्स को नोटिस भेजा है। हजरतगंज पुलिस स्टेशन में दर्ज हुआ मामला लखनऊ के हजरतगंज पुलिस स्टेशन में घुसखोर पंडित के निर्देशक और टीम के खिलाफ सामाजिक सद्भाव बिगाड़ने और धार्मिक/जातिगत भावनाओं को ठेस पहुंचाने के आरोप में मामला दर्ज किया गया है। इस मामले में लखनऊ कमिश्नरेट का कहना है कि किसी भी समुदाय की भावनाओं को ठेस पहुंचाने या शांति व्यवस्था भंग करने वाले तत्वों के खिलाफ शून्य–सहिष्णुता नीति के तहत सख्त से सख्त कार्रवाई की जाएगी। मेकर्स को अनाधिकृत शीर्षक का इस्तेमाल करने पर नोटिस एफएमसी की ओर से फिल्म के मेकर्स को नोटिसे भेजा गया है। इस नोटिस में कहा गया कि आप आईएमपीए के एक वास्तविक सदस्य हैं। हमारे आधिकारिक रिकॉर्ड के अनुसार आपने श्घूसखोर पंडितश शीर्षक के लिए आवेदन भी नहीं किया है। फिल्म मेकर्स कंबाइन के नियमों और विनियमों के अनुसार, आप इस अनअथराइज्ड और बिना आवेदन किए स्वीकृत शीर्षक का उपयोग नहीं कर सकते। निर्माताओं से तत्काल जवाब मांगते हुए, नोटिस में उन्हें अनुशासनात्मक कार्रवाई की चेतावनी भी दी गई है। नेटफ्लिक्स से भी शीर्षक का इस्तेमाल न करने की अपील दूसरी ओर एफएमसी ने स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म नेटफ्लिक्स को भी नोटिस जारी किया है। इस नोटिस में कहा गया कि हम आपको सूचित करना चाहते हैं कि आप फ्राइडे स्टोरी टेलर्स एलएलपी के नीरज पांडे द्वारा निर्मित फिल्म घुसखोर पंडात को अपने प्रतिष्ठित चौनल नेटफ्लिक्स पर रिलीज कर रहे हैं। फिल्म घुसखोर पंडात शीर्षक के लिए किसी भी निर्माता संघ से आवेदन या मंजूरी नहीं ली गई है।

आरसीबी की WPL में ऐतिहासिक जीत पर विराट कोहली का भावुक संदेश, कहा- आप लोग इस ट्रॉफी के हकदार

एजेंसी

वडोदरा। रॉयल चौलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) की महिला प्रीमियर लीग 2026 के फाइनल में शानदार जीत के बाद पुरुष टीम के पूर्व कप्तान और स्टार बल्लेबाज विराट कोहली ने सोशल मीडिया पर दिल छू लेने वाला संदेश साझा किया। कोहली ने इस जीत को पूरी टीम, प्रबंधन और खासतौर पर आरसीबी के जज्बाती प्रशंसकों को समर्पित किया। आप इस जीत के हकदार कोहली ने अपने संदेश में कहा कि टीम ने इस जीत को पूरी तरह डिजर्व किया है और खिलाड़ियों को इस पल का भरपूर आनंद लेना चाहिए। साथ ही उन्होंने आरसीबी के फैन्स के प्यार और समर्थन को भी खास तौर पर सराहा। विराट का यह संदेश न सिर्फ टीम का हौसला बढ़ाने वाला रहा, बल्कि आरसीबी फैन्स के लिए भी भावुक कर देने वाला पल बन गया। दो डब्ल्यूपीएल खिताब जीतने वाली दूसरी कप्तान बनीं मंधाना रॉयल चौलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) की दिल्ली कैपिटल्स पर छह विकेट से जीत के साथ महिला प्रीमियर लीग के चौथे संस्करण का समापन हो गया। गुरुवार को वडोदरा के कोतांबी स्टेडियम में खेले गए मुकाबले में टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी दिल्ली कैपिटल्स ने 20 ओवर में चार विकेट पर 203 रन बनाए।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक **धर्मेन्द्र सिंह** द्वारा शौर्य प्रिंटर्स, शिवपुरी कालोनी, निकट बांसमण्डी चौराहा, लखनऊ से मुद्रित तथा एमआईजी-47, सेक्टर-ई, अलीगंज, लखनऊ (उ.प्र.) से प्रकाशित
सम्पादक-अंजू सिंह (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा) Email-lkojunction@gmail.com. RNI NO.-UPHIN/2015/64743